Hinduism in Context

Correcting Popular Myths and Misquotes



By Satyadarshi

ABOUT THIS BOOK

Hinduism in Context is a clear, evidence-based response to the growing wave of misinformation, half truths, and viral claims about one of the world's oldest living traditions.

In the age of screenshots, short clips, and algorithm-driven outrage, Hinduism is often reduced to isolated verses, decontextualized practices, and sensational narratives detached from history, philosophy, and lived tradition. This book confronts those distortions head-on.

Drawing from scriptures, historical sources, cultural context, and traditional interpretations, Hinduism in Context systematically examines popular myths and commonly repeated online claims explaining not only what is wrong, but why those misunderstandings exist in the first place. Each chapter restores context where it has been stripped away, separating authentic teachings from misquotes, mistranslations, and modern projections.

Rather than reacting emotionally or defensively, this book takes a calm, analytical approach inviting readers to slow down, read deeply, and understand Hinduism as it has been understood within its own intellectual and civilizational framework.

Whether you are a student, researcher, practitioner, or a curious reader navigating conflicting narratives online, Hinduism in Context offers a grounded guide to discerning truth from trend, scholarship from speculation, and tradition from distortion.

INDEX

THIS INDEX IS INTERACTIVE CLICK ON ANY TOPIC YOU WANT TO KNOW THE CONTEXT OF IT WILL TAKE YOU TO THAT PAGE

DEFENCE

RESOURCES

HERE IS ALL THE LINKS OF THE RESOURCES ARE BEING USED IN THIS PROJECT'S DEFENSE PART.NEVER TRUST CHATGPT OR ANY OTHER PUBLICATION OTHER THAN GITA PRESS BECASUE THEY HAVE WRONG TRANSLATION AND MISINFORMATION. THIS IS AN INTERACTIVE SOURCE LINKS CLICK ON THE NAME OF THE SOURCE IT WILL TAKE YOU TO THAT SOURCE

VALMIKI RAMAYAN

SRIMAD BHAGAVAT MAHAPURANA

RAMCHARIT MANAS

MAHABHARATA

BRAMHAVAIVARTA PURANA

DEVI BHAGAVAT PURANA

PADMA PURANA

HARIVAMSA PURANA

VISHNU PURANA

SHIV PURANA

LINGA PURANA

MATSYA PURANA

SKANDA PURANA

VEDAS

SHREE RAM

SITA MA WAS 6 YEAR OLD

SO THIS IS THE ARGUMENT AGAINST IT YOU CAN PROVIDE THAT SHE IS NOT SOME NORMAL HUMAN DIDN'T BORN FROM WOMB BUT EMERGES FROM THE GROUND SHE WAS AN DEITY AND REINCARNATION OF GODDESS LAKSHMI AND SHREE RAM IS RE INCARNATION OF GOD VISHNU.VISHNU AND LAKSHMI ARE ETERNALLY MARRIED SO IT DOESNT MATTER WHAT AGE THEY GET MARRIED THEY ARE ALREADY MARRIED TO BEGIN WITH.

NOW I WILL GIVE THE REFERENCE WITH IMAGE OF EVERY SINGLE CLAIM ABOVE

SHE WASNT SOME NORMAL HUMAN DIDNT BORN FROM WOMB BUT EMERGES FROM THE GROUND
VALMIKI RMAYANA BALAKANDA CHAPTER 66 VERSE 13,14

'एक दिन मैं यज्ञके लिये भूमिशोधन करते समय खेतमें हल चला रहा था। उसी समय हलके अग्रभागसे जोती गयी भूमि (हराई या सीता) से एक कन्या प्रकट हुई। सीता (हलद्वारा खींची गयी रेखा) से उत्पन्न होनेके कारण उसका नाम सीता रखा गया। पृथ्वीसे प्रकट हुई वह मेरी कन्या क्रमश: बढ़कर सयानी हुई॥ १३-१४ ॥

SHREE RAM WAS VISHNU
VALMIKI RAMAYAN YUDDHAKANDA CHAPTER 117 VERSE 12 13

श्रीरघुनाथजीके ऐसा कहनेपर ब्रह्मवेत्ताओंमें श्रेष्ठ ब्रह्माजीने उनसे इस प्रकार कहा—'सत्यपराक्रमी श्रीरघुवीर! आप मेरी सच्ची बात सुनिये॥ १२ ॥

'आप चक्र धारण करनेवाले सर्वसमर्थ श्रीमान् भगवान् नारायण देव हैं, एक दाढ़वाले पृथ्वीधारी वराह हैं तथा देवताओंके भूत एवं भावी शत्रुओंको जीतनेवाले हैं॥ १३ ॥

SITA MA IS GODDESS LAKSHMI
VALMIKI RAMAYAN YUDHAKANDA CHAPTER 117 VERSE 27

'आपने अत्यन्त दारुण दैत्यराज बलिको बाँधकर इन्द्रको तीनों लोकोंका राजा बनाया था। सीता साक्षात् लक्ष्मी हैं और आप भगवान् विष्णु हैं। आप ही सच्चिदानन्दस्वरूप भगवान् श्रीकृष्ण एवं प्रजापति हैं॥ २७ ॥

GODDESS LAKSHMI APPEARS
SRIMAD BHAGAVATA MAHAPURANA CANTO 8 CHAPTER 8 VERSE 8

चितवनसे देवताओंको सुख पहुँचानेवाली हुई ।।७।। इसके बाद शोभाकी मूर्ति स्वयं भगवती लक्ष्मीदेवी प्रकट हुईं। वे भगवान्‌की नित्यशक्ति हैं। उनकी बिजलीके समान चमकीली छटासे दिशाएँ जगमगा उठीं ।।८।। उनके सौन्दर्य, औदार्य, यौवन, रूप-रंग और महिमासे सबका

GODDESS LAKSHMI CHOSE VISHNU AS HER HUSBAND AND HIS CHEST AS HER PERMANENT PLACE
SRIMAD BHAGAVATA MAHAPURANA CANTO 8 CHAPTER 8 VERSE 22 TO 24

समाधिमें ही तल्लीन रहते हैं ।।२१।। किसी-किसी ऋषिने आयु तो बहुत लंबी प्राप्त कर ली है, परन्तु उनका शील-मंगल भी मेरे योग्य नहीं है। किन्हींमें शील-मंगल भी है परन्तु उनकी आयुका कुछ ठिकाना नहीं। अवश्य ही किन्हींमें दोनों ही बातें हैं, परन्तु वे अमंगल-वेषमें रहते हैं। रहे एक भगवान् विष्णु—उनमें सभी मंगलमय गुण नित्य निवास करते हैं, परन्तु वे मुझे चाहते ही नहीं ।।२२।।

इस प्रकार सोच-विचारकर अन्तमें श्रीलक्ष्मीजीने अपने चिर अभीष्ट भगवान्को ही वरके रूपमें चुना; क्योंकि उनमें समस्त सद्गुण नित्य निवास करते हैं। प्राकृत गुण उनका स्पर्श नहीं कर सकते और अणिमा आदि समस्त गुण उनको चाहा करते हैं; परन्तु वे किसीकी भी अपेक्षा नहीं रखते। वास्तवमें लक्ष्मीजीके एकमात्र आश्रय भगवान् ही हैं। इसीसे उन्होंने उन्हींको वरण किया ।।२३।। लक्ष्मीजीने भगवान्के गलेमें वह नवीन कमलोंकी सुन्दर माला पहना दी, जिसके चारों ओर झुंड-के-झुंड मतवाले मधुकर गुंजार कर रहे थे। इसके बाद लज्जापूर्ण मुसकान और प्रेमपूर्ण चितवनसे अपने निवासस्थान उनके वक्षःस्थलको देखती हुई वे उनके पास ही खड़ी हो गयीं ।।२४।।

VISHNU CHOSE LAKSHMI TO BE HIS WIFE AND HIS CHEST TO BE PERMANENT PLACE FOR GODDESS LAKSHMI
SRIMAD BHAGAVATA MAHAPURANA CANTO 8 CHAPTER 8 VERSE 25

जगत्पिता भगवान्ने जगज्जननी, समस्त सम्पत्तियोंकी अधिष्ठातृदेवता श्रीलक्ष्मीजीको अपने वक्षःस्थलपर ही सर्वदा निवास करनेका स्थान दिया। लक्ष्मीजीने वहाँ विराजमान होकर अपनी करुणाभरी चितवनसे तीनों लोक, लोकपति और अपनी प्यारी प्रजाकी अभिवृद्धि की ।।२५।। उस समय शंख, तुरही, मृदंग आदि बाजे बजने लगे। गन्धर्व अप्सराओंके साथ

SHREE RAM USED TO HUNT ANIMALS

SO THIS IS THE ARGUMENT YOU CAN PROVIDE AGAINST IT.THAT THE ANIMALS GOT KILLED BY SHREE RAM GOES TO HEAVEN AND SHREE RAM KNOWS VEDAS AND IN VEDAS IT SAYS RAJPURUSH CAN KILL ANIMALS.

REFERENCE

SHREE RAM KNEW VEDAS
RAMCHARITMANAS BALAKANDA DOHA 204 CHAUPAI 3

जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा। करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा॥
बेद पुरान सुनहिं मन लाई। आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई॥

जिस प्रकार नगरके लोग सुखी हों, कृपानिधान श्रीरामचन्द्रजी वही संयोग (लीला) करते हैं। वे मन लगाकर वेद-पुराण सुनते हैं और फिर स्वयं छोटे भाइयोंको समझाकर कहते हैं॥ ३॥

VALMIKI RAMAYANA BALAKANDA CAHPTER 1 VERSE 14,15

'स्वधर्म और स्वजनोंके पालक, वेद-वेदांगोंके तत्त्ववेत्ता तथा धनुर्वेदमें प्रवीण हैं॥ १४॥

'वे अखिल शास्त्रोंके तत्त्वज्ञ, स्मरणशक्तिसे युक्त और प्रतिभासम्पन्न हैं। अच्छे विचार और उदार हृदयवाले वे श्रीरामचन्द्रजी बातचीत करनेमें चतुर तथा समस्त लोकोंके प्रिय हैं॥ १५॥

THE ANIMALS GET KILLED BY SHREE RAM GOES TO HEAVEN
RAMCHARITMANAS BALAKANDA DOHA 204 CHAUPAI 2

जे मृग राम बान के मारे। ते तनु तजि सुरलोक सिधारे॥
अनुज सखा सँग भोजन करहीं। मातु पिता अग्या अनुसरहीं॥

जो मृग श्रीरामजीके बाणसे मारे जाते थे, वे शरीर छोड़कर देवलोकको चले जाते थे। श्रीरामचन्द्रजी अपने छोटे भाइयों और सखाओंके साथ भोजन करते हैं और माता-पिताकी आज्ञाका पालन करते हैं॥ २॥

IN VEDA IT SAYS RAJPURUSH CAN KILL ANIMALS WHICH HARM HUMANS
YAJURVEDA CHAPTER 13 MANTRA 47

पदार्थान्वयभाषाः -हे (अग्ने) अग्नि के समान मनुष्य के जन्म को प्राप्त हुए (मेधाय) सुख की प्राप्ति के लिये (चीयमानः) बढ़े हुए (सहस्राक्षः) हजारह प्रकार की दृष्टिवाले राजन्! तू (इमम्) इस (द्विपादम्) दो पगवाले मनुष्यादि और (मेधम्) पवित्रकारक फलप्रद (मयुम्) जंगली (पशुम्) गवादि पशु जीव को (मा) मत (हिंसीः) मारा कर, उस (पशुम्) पशु की (जुषस्व) सेवा कर, (तेन) उस पशु से (चिन्वानः) बढ़ता हुआ तू (तन्वः) शरीर में (निषीद) निरन्तर स्थिर हो, यह (ते) तेरे से (शुक्) शोक (मयुम्) शस्यादिनाशक जंगली पशु को (ऋच्छतु) प्राप्त होवे (ते) तेरे (यम्) जिस शत्रु से हम लोग (द्विष्मः) द्वेष करें, (तम्) उसको (शुक्) शोक (ऋच्छतु) प्राप्त होवे॥ ४७॥

भावार्थभाषाः -कोई भी मनुष्य सब के उपकार करनेहारे पशुओं को कभी न मारे, किन्तु इनकी अच्छे प्रकार रक्षा कर और इन से उपकार ले के सब मनुष्यों को आनन्द देवे। जिन जंगली पशुओं से ग्राम के पशु, खेती और मनुष्यों की हानि हो, उनको राजपुरुष मारें और बन्धन करें॥४७॥

SHREE RAM USED TO EAT MEAT

SHREE RAM NEVER ATE MEAT.PEOPLE SHOW SOME MISS TRANSLATION OF RAMAYANA TO SHOW SHREE RAM ATE MEAT.THATS WHY ALWAYS READ YOUR SCRIPTURES FROM AUTHENTIC SOURCES IN OUR CASE WHICH IS FROM GITA PRESS WHICH IS THE MOST AUTHENTIC PUBLICATION OF HINDU SCRIPTURES.IN THIS ALL OF THOSE VERSES WERE TALKING ABOUT FLESH OF FRUITS NOT MEAT.
SO THIS IS ARGUMENT YOU CAN PROVIDE AGAINST IT.
SHREE RAM SAID HE WILL ONLY LIVE ON FRUIT AND EDIBLE ROOTS ONE TIME REFUSED MEAT BECAUSE OF THIS HANUMAN SAID SHREE DO FASTING 2 TIMES AND ONLY EAT FRUIT ONE TIME AND IN MAHABHARAT IT LIST VARIOUS NAME OF KINGS WHO NEVER ATE MEAT,SHREE RAM'S NAME IN IT.

REFERENCE

REFUSED FOOD FROM GUHA AND SAID I ONLY EAT FRUIT AND ROOT
VALMIKI RAMAYANA AYODHYAKANDA CHAPTER 50 VERSE 43,44

'तुमने प्रेमवश यह जो कुछ सामग्री प्रस्तुत की है, इसे स्वीकार करके मैं तुम्हें वापिस ले जानेकी आज्ञा देता हूँ; क्योंकि इस समय दूसरोंकी दी हुई कोई भी वस्तु मैं ग्रहण नहीं करता—अपने उपयोगमें नहीं लाता॥

'वल्कल और मृगचर्म धारण करके फल-मूलका आहार करता हूँ और धर्ममें स्थित रहकर तापसवेशमें वनके भीतर ही विचरता हूँ। इन दिनों तुम मुझे इसी नियममें स्थित जानो॥ ४४ ॥

SHREE RAM SAID HE ONLY EATS FRUITS AND EDIBLE ROOTS
VALMIKI RAMAYANA AYODHYAKANDA CHAPTER 20 VERSE 29

'मैं राजभोग्य वस्तुका त्याग करके मुनिकी भाँति कन्द, मूल और फलोंसे जीवन-निर्वाह करता हुआ चौदह वर्षोंतक निर्जन वनमें निवास करूँगा॥ २९ ॥

HANUMAN SAID TO SITA SHREE RAM ONLY EAT FRUITS AND EDIBLE ROOTS
VALMIKI RAMAYANA SUNDARKANDA CHAPTER 36 VERSE 41

'कोई भी रघुवंशी न तो मांस खाता है और न मधुका ही सेवन करता है; फिर भगवान् श्रीराम इन वस्तुओंका सेवन क्यों करते? वे सदा चार समय उपवास करके पाँचवें समय शास्त्रविहित जंगली फल-मूल और नीवार आदि भोजन करते हैं॥ ४१ ॥

IN MAHABHARAT IT NAMES VARIOUS KINGS WHO NEVER ATE MEAT SHREE RAM'S NAME IN IT
MAHABHARAT ANUSHASONPARVA CHAPTER 115 VERSE 63 TO 67

रैवते रन्तिदेवेन वसुना सृञ्जयेन च ।। ६३ ।।
एतैश्चान्यैश्च राजेन्द्र कृपेण भरतेन च ।
दुष्यन्तेन करूषेण रामालर्कनरैस्तथा ।। ६४ ।।
विरूपाश्वेन निमिना जनकेन च धीमता ।
ऐलेन पृथुना चैव वीरसेनेन चैव ह ।। ६५ ।।
इक्ष्वाकुणा शम्भुना च श्वेतेन सगरेण च ।
अजेन धुन्धुना चैव तथैव च सुबाहुना ।। ६६ ।।
हर्यश्वेन च राजेन्द्र क्षुपेण भरतेन च ।
एतैश्चान्यैश्च राजेन्द्र पुरा मांसं न भक्षितम् ।। ६७ ।।

राजेन्द्र! श्येनचित्र, सोमक, वृक, रैवत, रन्तिदेव, वसु, सृंजय, अन्यान्य नरेश, कृप, भरत, दुष्यन्त, करूष, राम, अलर्क, नर, विरूपाश्व, निमि, बुद्धिमान् जनक, पुरूरवा, पृथु, वीरसेन, इक्ष्वाकु, शम्भु, श्वेतसागर, अज, धुन्धु, सुबाहु, हर्यश्व, क्षुप, भरत—इन सबने तथा अन्यान्य राजाओंने भी कभी मांस नहीं खाया था ।।

SHREE RAM KILLED AN SUDRA

IN UTTARKANDA SHREE RAM KILLED AN SUDRA PEOPLE USE THIS REFERENCE TO MOCK SHREE RAM BUT THERE IS A HUGE CONTEXT BEHIND IT.THE SUDRA WANTED TO GO TO HEAVEN WITH HUMAN BODY AND WANTED TO RULE HEAVEN AND ONE KID WAS KILLED BECAUSE OF HIM DOING TAPASSA.AFTER SHREE RAM KILLED HIM THE BOY CAME BACK TO LIFE.AFTER THIS WE WILL SEE SHREE RAM'S VARIOUS INTERACTION WITH LOWER CASTE PEOPLE.

REFERENCE

ONE BRAHMAN CAME TO SHREE RAM WITH HIS DEAD CHILD
VALMIKI RAMAYANA UTTARAKANDA CHAPTER 73 VERSE 2

तदनन्तर कुछ दिनोंके बाद उस जनपदके भीतर रहनेवाला एक बूढ़ा ब्राह्मण अपने मरे हुए बालकका शव लेकर राजद्वारपर आया॥ २ ॥

THAT BRAHMIN SAID TO SHREE RAM IF HE DOESN'T SAVE HIS LIFE HE AND HIS WIFE WILL COMMIT SUICIDE
VALMIKI RAMAYANA UTTARAKANDA CHAPTER 73 VERSE 11,12

'दूसरे राज्यमें रहनेवाले बालकोंको मृत्युसे भय नहीं है; अत: राजन्! मृत्युके वशमें पड़े हुए इस बालकको जीवित कर दो, नहीं तो मैं अपनी स्त्रीके साथ इस राजद्वारपर अनाथकी भाँति प्राण दे दूँगा। श्रीराम! फिर ब्रह्महत्याका पाप लेकर तुम सुखी होना॥ ११-१२ ॥

A SUDRA IS DOING TAPASSA THATS WHY THAT CHILD GOT KILLED
VALMIKI RAMAYANA UTTARAKANDA CHAPTER 74 VERSE 28

'राजन्! द्वापरमें भी शूद्रका तपमें प्रवृत्त होना महान् अधर्म माना गया है। (फिर त्रेताके लिये तो कहना ही क्या है?) महाराज! निश्चय ही आपके राज्यकी किसी सीमापर कोई खोटी बुद्धिवाला शूद्र महान् तपका आश्रय ले तपस्या कर रहा है, उसीके कारण इस बालककी मृत्यु हुई है॥ २८ $^1/_2$ ॥

NARAD MUNI TELL SHREE RAM YOU MUST TRY TO STOP THAT SUDRA IF YOU DO THAT CHILD WILL COME BACK TO LIFE
VALMIKI RAMAYANA UTTARAKANDA CHAPTER 74 VERSE 32,33

'पुरुषसिंह! जो प्रजाके शुभ कर्मोंके छठे भागका उपभोक्ता है, वह प्रजाकी रक्षा कैसे नहीं करेगा? अत: आप अपने राज्यमें खोज कीजिये और जहाँ कोई दुष्कर्म दिखायी दे, वहाँ उसके रोकनेका प्रयत्न कीजिये॥ ३२ $^1/_2$ ॥

'नरश्रेष्ठ! ऐसा करनेसे धर्मकी वृद्धि होगी और मनुष्योंकी आयु बढ़ेगी। साथ ही इस बालकको भी नया जीवन प्राप्त होगा'॥ ३३ ॥

SHREE RAM FOUND HIM ASKED HIM WHY ARE YOU DOING TAPASSSA HE SAID I WANT TO GO TO HEAVEN WITH THIS BODY AND RULE HEAVEN AFTER HEARING THAT SHREE RAM KILLED HIM
VALMIKI RAMAYANA UTTARAKANDA CHAPTER 76 VERSE 2,3,4

'महायशस्वी श्रीराम! मैं शूद्रयोनिमें उत्पन्न हुआ हूँ और सदेह स्वर्गलोकमें जाकर देवत्व प्राप्त करना चाहता हूँ। इसीलिये ऐसा उग्र तप कर रहा हूँ॥ २ ॥

'ककुत्स्थकुलभूषण श्रीराम! मैं झूठ नहीं बोलता। देवलोकपर विजय पानेकी इच्छासे ही तपस्यामें लगा हूँ। आप मुझे शूद्र समझिये। मेरा नाम शम्बूक है'॥ ३ ॥

वह इस प्रकार कह ही रहा था कि श्रीरामचन्द्रजीने म्यानसे चमचमाती हुई तलवार खींच ली और उसीसे उसका सिर काट लिया॥ ४ ॥

THE MOMENT THAT SUDRA GOT KILLED THE BOY GET HIS LIFE BACK
VALMIKI RAMAYANA UTTARAKANDA CHAPTER 76 VERSE 15

'काकुत्स्थ! आपने जिस मुहूर्तमें इस शूद्रको धराशायी किया है, उसी मुहूर्तमें वह बालक जी उठा है॥ १५ ॥

NOW YOU KNOW WHY SHREE RAM KILLED SAMBHUKA NOW WE WILL SEE VARIOUS INTERACTION OF SHREE RAM WITH LOWER CASTE PEOPLE

GUHA IS A FRIEND OF SHREE RAM WHO IS FROM NISHADA COMUUNITY(LOWER CASTE TRIBAL PEOPLE)
VALMIKI RAMAYANA AYODHYAKANDA CHAPTER 50 VERSE 33

शृङ्गवेरपुरमें गुहनामका राजा राज्य करता था। वह श्रीरामचन्द्रजीका प्राणोंके समान प्रिय मित्र था। उसका जन्म निषादकुलमें हुआ था। वह शारीरिक शक्ति और सैनिक शक्तिकी दृष्टिसे भी बलवान् था तथा वहाँके निषादोंका सुविख्यात राजा था॥ ३३ ॥

SHREE RAM HUGGED GUHA
VALMIKI RAMAYANA AYODHYAKANDA CHAPTER 50 VERSE 41 42

फिर श्रीरामने अपनी दोनों गोल-गोल भुजाओंसे गुहका अच्छी तरह आलिङ्गन करते हुए कहा— 'गुह! सौभाग्यकी बात है कि मैं आज तुम्हें बन्धु-बान्धवोंके साथ स्वस्थ एवं सानन्द देख रहा हूँ। बताओ, तुम्हारे राज्यमें, मित्रोंके यहाँ तथा वनोंमें सर्वत्र कुशल तो है?॥ ४१-४२ ॥

GUHA IS FROM LOWER CASTE IF ANYONE TOUCHES HIS SHADOW THAT PERSON TAKES BATH STILL SHREE RAM HUGGED HIM
RAMCHARITMANAS AYODHYAKANDA DOHA 193 CHAUPAI 2,3

लोक बेद सब भाँतिहिं नीचा। जासु छाँह छुइ लेइअ सींचा॥
तेहि भरि अंक राम लघु भ्राता। मिलत पुलक परिपूरित गाता॥

[वे कहते हैं—] जो लोक और वेद दोनोंमें सब प्रकारसे नीचा माना जाता है, जिसकी छायाके छू जानेसे भी स्नान करना होता है, उसी निषादसे अँकवार भरकर (हृदयसे चिपटाकर) श्रीरामचन्द्रजीके छोटे भाई भरतजी [आनन्द और प्रेमवश] शरीरमें पुलकावलीसे परिपूर्ण हो मिल रहे हैं॥ २॥

राम राम कहि जे जमुहाहीं। तिन्हहि न पाप पुंज समुहाहीं॥
यह तौ राम लाइ उर लीन्हा। कुल समेत जगु पावन कीन्हा॥

जो लोग राम-राम कहकर जँभाई लेते हैं (अर्थात् आलस्यसे भी जिनके मुँहसे रामनामका उच्चारण हो जाता है), पापोंके समूह (कोई भी पाप) उनके सामने नहीं आते। फिर इस गुहको तो स्वयं श्रीरामचन्द्रजीने हृदयसे लगा लिया और कुलसमेत इसे जगत्पावन (जगत्को पवित्र करनेवाला) बना दिया॥ ३॥

HE WAS LOWBORN BUT ACCEPTED BY SHREE RAM AND TOOK HIM AS HIS OWN
RAMCHARITMANAS AYODHYAKANDA DOHA 195 CHAUPAI 1

कपटी कायर कुमति कुजाती। लोक बेद बाहेर सब भाँती॥
राम कीन्ह आपन जबही तें। भयउँ भुवन भूषन तबही तें॥

मैं कपटी, कायर, कुबुद्धि और कुजाति हूँ और लोक-वेद दोनोंसे सब प्रकारसे बाहर हूँ। पर जबसे श्रीरामचन्द्रजीने मुझे अपनाया है, तभीसे मैं विश्वका भूषण हो गया॥ १ ॥

SABARI TOUCHES SHREE RAM'S FEET AND SHREE RAM ASKED HER ABOUT HOW'S HER TAPASSA GOING?
VALMIKI RAMAYANA ARANYAKANDA CHAPTER 74 VERSE 6,7,8

शबरी सिद्ध तपस्विनी थी। उन दोनों भाइयोंको आश्रमपर आया देख वह हाथ जोड़कर खड़ी हो गयी तथा उसने बुद्धिमान् श्रीराम और लक्ष्मणके चरणोंमें प्रणाम किया॥ ६ ॥

फिर पाद्य, अर्घ्य और आचमनीय आदि सब सामग्री समर्पित की और विधिवत् उनका सत्कार किया। तत्पश्चात् श्रीरामचन्द्रजी उस धर्मपरायणा तपस्विनीसे बोले—॥ ७ ॥

'तपोधने! क्या तुमने सारे विघ्नोंपर विजय पा ली? क्या तुम्हारी तपस्या बढ़ रही है? क्या तुमने क्रोध और आहारको काबूमें कर लिया है?॥ ८ ॥

SABARI SAYS SHE IS FROM LOWER CASTE SHREE RAMS SAYS ONLY BHAKTI MATTERS TO HIM CASTE DOEST MATTER
RAMCHARITMANAS ARANYAKANDA DOHA 34 CHAUPAI 1,2,3

फिर वे हाथ जोड़कर आगे खड़ी हो गयीं। प्रभुको देखकर उनका प्रेम अत्यन्त बढ़ गया। [उन्होंने कहा—] मैं किस प्रकार आपकी स्तुति करूँ? मैं नीच जातिकी और अत्यन्त मूढ़बुद्धि हूँ॥ १ ॥

अधम ते अधम अधम अति नारी। तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी॥
कह रघुपति सुनु भामिनि बाता। मानउँ एक भगति कर नाता॥

जो अधमसे भी अधम हैं, स्त्रियाँ उनमें भी अत्यन्त अधम हैं; और उनमें भी हे पापनाशन! मैं मन्दबुद्धि हूँ। श्रीरघुनाथजीने कहा—हे भामिनि! मेरी बात सुन। मैं तो केवल एक भक्तिहीका सम्बन्ध मानता हूँ॥ २ ॥

जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई। धन बल परिजन गुन चतुराई॥
भगति हीन नर सोहइ कैसा। बिनु जल बारिद देखिअ जैसा॥

जाति, पाँति, कुल, धर्म, बड़ाई, धन, बल, कुटुम्ब, गुण और चतुरता—इन सबके होनेपर भी भक्तिसे रहित मनुष्य कैसा लगता है, जैसे जलहीन बादल [शोभाहीन] दिखायी पड़ता है॥ ३ ॥

IN RAM RAJYA ALL 4 VARNA USED TO LIVE SATISFIED WITH THEIR WORK
VALMIKI RAMAYANA YUDDHAKANDA CHAPTER 128 VERSE 104

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्णोंके लोग लोभरहित होते थे। सबको अपने ही वर्णाश्रमोचित कर्मोंसे संतोष था और सभी उन्हींके पालनमें लगे रहते थे॥ १०४ ॥

SITA'S AGNI PARIKSHA

PEOPLE USE THIS TOPIC TO SHOW SHREE RAM DIDN,T BELIVE SITA MA AND SHE HAD TO TAKE AGNI PARIKSHA.WHY WOMEN HAVE TO TAKE AGNI PARIKSHA?SO ON WITHOUT KNOWING ACTUAL CONTEXT.SITA MA DID THE AGNI PARIKSHA BY HERSELF SHE KNEW IF SHE WAS PURE FIRE WONT BE ABLE TO HURT HER.SHREE RAM ALSO KNEW SITA WAS PURE AND RAAVAN COULD NOT TOUCH HER BECAUSE OF HIS CURSE.WE WILL ALSO SEE NO ONLY WOMEN ALSO MEN GIVEN AGNI PARIKSHA.AND WHY SITA MA'S AGNI PARIKSHA WAS NEEDED TO SWAP REAL SITA WITH CHAYA SITA WE WILL ALSO SEE THAT.

REFERENCE

SHREE RAM DIDNT TELL SITA TO TAKE PARIKSHA SHE DID IT BY HERSELF.SHE TOLD LAKSHMAN TO PREPARE THE PYRE
VALMIKI RAMAYANA YUDDHAKANDA CHAPTER 116 VERSE 18

'सुमित्रानन्दन! मेरे लिये चिता तैयार कर दो। मेरे इस दु:खकी यही दवा है। मिथ्या कलङ्कसे कलङ्कित होकर मैं जीवित नहीं रह सकती॥ १८ ॥

SITA WALKS IN BLAZING FIRE AND SAID IF SHE IS PURE AGNIDEV WILL PROTECT HER
VALMIKI RAMAYANA YUDDHAKANDA CHAPTER 116 VERSE 23 TO 27

भगवान् श्रीराम सिर झुकाये खड़े थे। उसी अवस्थामें सीताजीने उनकी परिक्रमा की। इसके बाद वे प्रज्वलित अग्निके पास गयीं॥ २३ ॥

वहाँ देवताओं तथा ब्राह्मणोंको प्रणाम करके मिथिलेशकुमारीने दोनों हाथ जोड़कर अग्निदेवके समीप इस प्रकार कहा—॥ २४ ॥

'यदि मेरा हृदय कभी एक क्षणके लिये भी श्रीरघुनाथजीसे दूर न हुआ हो तो सम्पूर्ण जगत्के साक्षी अग्निदेव मेरी सब ओरसे रक्षा करें॥ २५ ॥

'मेरा चरित्र शुद्ध है फिर भी श्रीरघुनाथजी मुझे दूषित समझ रहे हैं। यदि मैं सर्वथा निष्कलङ्क होऊँ तो सम्पूर्ण जगत्के साक्षी अग्निदेव मेरी सब ओरसे रक्षा करें॥ २६ ॥

'यदि मैंने मन, वाणी और क्रियाद्वारा कभी सम्पूर्ण धर्मोंके ज्ञाता श्रीरघुनाथजीका अतिक्रमण न किया हो तो अग्निदेव मेरी रक्षा करें'॥ २७ ॥

AGNIDEV AND SITA COMES OUT OF FIRE UNTOUCHED BY FIRE AND AGNIDEV SAID SITA IS PURE AND DIDN'T COMMIT ANY SIN
VALMIKI RAMAYANA YUDDHAKANDA CHAPTER 118 VERSE 1 TO 5

ब्रह्माजीके कहे हुए इन शुभ वचनोंको सुनकर मूर्तिमान् अग्निदेव विदेहनन्दिनी सीताको (पिताकी भाँति) गोदमें लिये चितासे ऊपरको उठे॥ १ ॥

उस चिताको हिलाकर इधर-उधर बिखराते हुए दिव्य रूपधारी हव्यवाहन अग्निदेव वैदेही सीताको साथ लिये तुरंत ही उठकर खड़े हो गये॥ २ ॥

सीताजी प्रात:कालके सूर्यकी भाँति अरुण-पीत कान्तिसे प्रकाशित हो रही थीं। तपाये हुए सोनेके आभूषण उनकी शोभा बढ़ा रहे थे। उनके श्रीअङ्गोंपर लाल रंगकी रेशमी साड़ी लहरा रही थी। सिरपर काले-काले घुँघराले केश सुशोभित होते थे। उनकी अवस्था नयी थी और उनके द्वारा धारण किये गये फूलोंके हार कुम्हलायेतक नहीं थे। अनिन्द्य सुन्दरी सती-साध्वी सीताका अग्निमें प्रवेश करते समय जैसा रूप और वेष था, वैसे ही रूप-सौन्दर्यसे प्रकाशित होती हुई उन वैदेहीको गोदमें लेकर अग्निदेवने श्रीरामको समर्पित कर दिया॥ ३-४ ॥

उस समय लोकसाक्षी अग्निने श्रीरामसे कहा— 'श्रीराम! यह आपकी धर्मपत्नी विदेहराजकुमारी सीता है। इसमें कोई पाप या दोष नहीं है॥ ५ ॥

SHREE RAM SAID HE KNEW SITA WAS PURE AND RAAVAN COULN'T TOUCH HER BUT IT WAS NEEDED TO PROVE THAT TO THE PEOPLE THAT SHE IS PURE.
VALMIKI RAMAYANA YUDDHAKANDA CHAPTER 118 VERSE 13 TO 16

'भगवन्! लोगोंमें सीताजीकी पवित्रताका विश्वास दिलानेके लिये इनकी यह शुद्धिविषयक परीक्षा आवश्यक थी; क्योंकि शुभलक्षणा सीताको विवश होकर दीर्घकालतक रावणके अन्त:पुरमें रहना पड़ा है॥ १३ ॥

'यदि मैं जनकनन्दिनीकी शुद्धिके विषयमें परीक्षा न करता तो लोग यही कहते कि दशरथपुत्र राम बड़ा ही मूर्ख और कामी है॥ १४ ॥

'यह बात मैं भी जानता हूँ कि मिथिलेशनन्दिनी जनककुमारी सीताका हृदय सदा मुझमें ही लगा रहता है। मुझसे कभी अलग नहीं होता। ये सदा मेरा ही मन रखतीं—मेरी इच्छाके अनुसार चलती हैं॥ १५ ॥

'मुझे यह भी विश्वास है कि जैसे महासागर अपनी तटभूमिको नहीं लाँघ सकता, उसी प्रकार रावण अपने ही तेजसे सुरक्षित इन विशाललोचना सीतापर अत्याचार नहीं कर सकता था॥ १६ ॥

WHY RAAVAN COULDN'T TOUCH SITA BECAUSE HE WAS CURSED AND COULDN'T FORCE ANY WOMEN OR HIS HEAD WILL EXPLODE
VALMIKI RAMAYANA YUDDHAKANDA CHAPTER 13 VERSE 11 TO 15

'एक बार मैंने आकाशमें अग्निशिखाके समान प्रकाशित होती हुई पुञ्जिकस्थला नामकी अप्सराको देखा, जो पितामह ब्रह्माजीके भवनकी ओर जा रही थी। वह अप्सरा मेरे भयसे लुकती-छिपती आगे बढ़ रही थी॥

'मैंने बलपूर्वक उसके वस्त्र उतार दिये और हठात् उसका उपभोग किया। इसके बाद वह ब्रह्माजीके भवनमें गयी। उसकी दशा हाथीद्वारा मसलकर फेंकी हुई कमलिनीके समान हो रही थी॥ १२ ॥

'मैं समझता हूँ कि मेरे द्वारा उसकी जो दुर्दशा की गयी थी, वह पितामह ब्रह्माजीको ज्ञात हो गयी। इससे वे अत्यन्त कुपित हो उठे और मुझसे इस प्रकार बोले—॥ १३ ॥

'आजसे यदि तू किसी दूसरी नारीके साथ बलपूर्वक समागम करेगा तो तेरे मस्तकके सौ टुकड़े हो जायँगे, इसमें संशय नहीं है'॥ १४ ॥

'इस तरह मैं ब्रह्माजीके शापसे भयभीत हूँ। इसीलिये अपनी शुभ-शय्यापर विदेहकुमारी सीताको हठात् एवं बलपूर्वक नहीं चढ़ाता हूँ॥ १५ ॥

NOW WHY AGNI PARIKSHA WAS NECESSARY BECAUSE AGNIDEV SWAP REAL SITA WITH CHAYA SITA BEFORE RAAVAN ABDUCTED HER AND DURING AGNI PARIKSHA AGNI DEV AGAIN SWAP CHAYA SITA WITH REAL SITA.THIS CAN BE FOUND IN TWO DIFFERENT PURANAS
BRAMHAVAIVARTA PURANA PRAKRITIKHANDA CHAPTER 12

ब्राह्मणवेषधारी अग्निने कहा—भगवन्! मेरी कुछ प्रार्थना सुनिये। श्रीराम! यह सीताके हरणका समय उपस्थित है। ये मेरी माँ हैं; इन्हें मेरे संरक्षणमें रखकर आप छायामयी सीताको अपने साथ रखिये; फिर अग्निपरीक्षाके समय इन्हें मैं आपको लौटा दूँगा। परीक्षा-लीला भी हो जायगी। इसी कार्यके लिये मुझे देवताओंने यहाँ भेजा है। मैं ब्राह्मण नहीं, साक्षात् अग्नि हूँ।

भगवान् श्रीरामने अग्निकी बात सुनकर लक्ष्मणको बताये बिना ही व्यथित-हृदयसे अग्निके

प्रस्तावको मान लिया। नारद! उन्होंने सीताको अग्निके हाथों सौंप दिया। तब अग्निने योगबलसे मायामयी सीता प्रकट की। उसके रूप और गुण साक्षात् सीताके समान ही थे। अग्निदेवने उसे रामको दे दिया। मायासीताको साथ ले वे आगे बढ़े। इस गुप्त रहस्यको प्रकट करनेके लिये भगवान् रामने उसे मना कर दिया। यहाँतक कि लक्ष्मण भी इस रहस्यको नहीं जान सके; फिर दूसरेकी तो बात ही क्या है? इसी बीच भगवान्

बन्धु-बान्धवोंसहित रावणका वध कर डाला। तत्पश्चात् उन्होंने सीताकी अग्निपरीक्षा करायी। अग्निदेवने उसी क्षण वास्तविक सीताको भगवान् रामके सामने उपस्थित कर दिया। तब छायासीताने

DEVI BHAGAVAT PURANA CANTO 9 CHAPTER 16 VERSE 28 TO 35 ,46,47

तस्थौ समुद्रनिकटे सीतया लक्ष्मणेन च।
ददर्श तत्र वह्निं च विप्ररूपधरं हरिः॥ २८

रामं च दुःखितं दृष्ट्वा स च दुःखी बभूव ह।
उवाच किञ्चित्सत्येष्टं सत्यं सत्यपरायणः॥ २९

द्विज उवाच

भगवञ्छ्रूयतां राम कालोऽयं यदुपस्थितः।
सीताहरणकालोऽयं तवैव समुपस्थितः॥ ३०

दैवं च दुर्निवार्यं च न च दैवात्परो बली।
जगत्प्रसूं मयि न्यस्य छायां रक्षान्तिकेऽधुना॥ ३१

दास्यामि सीतां तुभ्यं च परीक्षासमये पुनः।
देवैः प्रस्थापितोऽहं च न च विप्रो हुताशनः॥ ३२

रामस्तद्वचनं श्रुत्वा न प्रकाश्य च लक्ष्मणम्।
स्वीकारं वचसश्चक्रे हृदयेन विदूयता॥ ३३

वह्निर्योगेन सीताया मायासीतां चकार ह।
तत्तुल्यगुणसर्वाङ्गां ददौ रामाय नारद॥ ३४

सीतां गृहीत्वा स ययौ गोप्यं वक्तुं निषिध्य च।
लक्ष्मणो नैव बुबुधे गोप्यमन्यस्य का कथा॥ ३५

वे सीता और लक्ष्मणके साथ समुद्रके समीप स्थित थे। उसी समय भगवान्‌ने विप्ररूपधारी अग्निदेवको वहाँ देखा। तब श्रीरामको दुःखित देखकर अग्नि भी बहुत दुःखी हुए। इसके बाद सत्यपरायण वे अग्निदेव सत्यप्रेमी भगवान् श्रीरामसे यह सत्यवचन कहने लगे॥ २८-२९॥

द्विज बोले—हे भगवन्! हे श्रीराम! सुनिये, यह जो काल आपके समक्ष उपस्थित है, वह सीता-हरणके समयके रूपमें ही आया हुआ है। दैवका प्रतिकार अत्यन्त कठिन है, उस दैवसे बढ़कर बलवान् अन्य कोई नहीं है। अतः आप इस समय जगज्जननी सीताको मुझमें स्थापित करके छायामयी सीताको अपने साथ रख लीजिये। इनकी परीक्षाका समय आनेपर मैं इन सीताको पुनः आपको सौंप दूँगा। मैं ब्राह्मण नहीं हूँ, अपितु इसी कार्यहेतु देवताओंके द्वारा भेजा गया साक्षात् अग्निदेव हूँ॥ ३०—३२॥

श्रीरामने उनकी यह बात सुनकर लक्ष्मणको बताये बिना ही अत्यन्त दुःखी मनसे वह वचन स्वीकार कर लिया॥ ३३॥

हे नारद! तत्पश्चात् अग्निदेवने योगबलसे सीताके ही समान एक माया-सीताकी रचना की। इसके बाद अग्निने गुण और स्वरूपमें उस सीताके ही तुल्य माया-सीताको श्रीरामको सौंप दिया॥ ३४॥

श्रीराम इस गुप्त रहस्यको प्रकट करनेका निषेध करके माया-सीताको साथ लेकर चल पड़े। लक्ष्मणतक इस रहस्यको नहीं जान पाये तो दूसरेकी बात ही क्या॥ ३५॥

लङ्कां गत्वा रघुश्रेष्ठो जघान सायकेन च।
कालेन प्राप्य तं हत्वा रावणं बान्धवैः सह॥ ४६

तां च वह्निपरीक्षां च कारयामास सत्वरम्।
हुताशस्तत्र काले तु वास्तवीं जानकीं ददौ॥ ४७

सहायक बनाकर समुद्रपर पुल बाँधा॥ ४५॥

पुनः समय आनेपर लंका जाकर उन रघुश्रेष्ठ रामने बाणसे रावणको मार डाला। इस प्रकार बान्धवोंसहित उस रावणका वध करके श्रीरामने तत्काल उन सीताकी अग्निपरीक्षा करायी। उसी समय अग्निदेवने वास्तविक सीता श्रीरामको सौंप दी॥ ४६-४७॥

WHY WOMEN SHOULD ONLY GIVE AGNI PARIKSHA?MAN HAS ALSO GIVEN AGNI PARIKSHA

PADMA PURANA SRISHTIKHANDA CHAPTER 39

श्रीभगवान् कहते हैं—ऐसा कहकर महाभाग अद्रोहक अग्निमें प्रवेश कर गये। किन्तु अग्नि उनके शरीर, वस्त्र और केशोंको जला नहीं सका। आकाशमें खड़े समस्त देवता प्रसन्न होकर उन्हें साधुवाद देने लगे। सबने चारों ओरसे उनके मस्तकपर फूलोंकी वर्षा की। जिन-जिन लोगोंने राजकुमारकी पत्नी और अद्रोहकके सम्बन्धमें कलङ्कपूर्ण बात कही थी, उनके मुँहपर नाना प्रकारकी कोढ़ हो गयी। देवताओंने वहाँ उपस्थित हो

SHREE RAM LEAVE SITA WHEN SHE WAS PREGNANT

SHREE RAM DIDN'T LEAVE HER SITA WANTED TO GO TO THAT ASHRAM AND LIVE THERE THATS WHY SHREE RAM SEND HER TO THAT ASHRAM

REFERENCE

SITA WANTED TO GO TO THAT ASHRAM AND LIVE THERE AND SHREE RAM SAID OKAY YOU WILL GO TOMORROW
VALMIKI RAMAYANA UTTARAKANDA CHAPTER 42 VERSE 32 TO 35

फिर वे देवकन्याके समान सुन्दरी सीतासे बोले—'विदेहनन्दिनि! तुम्हारे गर्भसे पुत्र प्राप्त होनेका यह समय उपस्थित है। वरारोहे! बताओ, तुम्हारी क्या इच्छा है? मैं तुम्हारा कौन-सा मनोरथ पूर्ण करूँ?'॥ ३१½ ॥

इसपर सीताजीने मुसकराकर श्रीरामचन्द्रजीसे कहा—'रघुनन्दन! मेरी इच्छा एक बार उन पवित्र तपोवनोंको देखनेकी हो रही है। देव! गङ्गातटपर रहकर फल-मूल खानेवाले जो उग्र तेजस्वी महर्षि हैं, उनके समीप (कुछ दिन) रहना चाहती हूँ। काकुत्स्थ! फल-मूलका आहार करनेवाले महात्माओंके तपोवनमें एक रात निवास करूँ, यही मेरी इस समय सबसे बड़ी अभिलाषा है'॥ ३२—३४½ ॥

अनायास ही महान् कर्म करनेवाले श्रीरामने सीताकी इस इच्छाको पूर्ण करनेकी प्रतिज्ञा की और कहा—'विदेहनन्दिनि! निश्चिन्त रहो। कल ही वहाँ जाओगी, इसमें संशय नहीं है'॥ ३५ ॥

SHREE RAM KNEW SITA IS PURE
VALMIKI RAMAYANA UTTARAKANDA CHAPTER 45 VERSE 7 TO 10

विश्वास दिलानेके लिये सीताने तुम्हारे सामने ही अग्निमें प्रवेश किया था और देवताओंके समक्ष स्वयं अग्निदेवने उन्हें निर्दोष बताया था। आकाशचारी वायु, चन्द्रमा और सूर्यने भी पहले देवताओं तथा समस्त ऋषियोंके समीप जनकनन्दिनीको निष्पाप घोषित किया था॥ ७-८½ ॥

'इस प्रकार विशुद्ध आचारवाली सीताको देवताओं और गन्धर्वोंके समीप साक्षात् देवराज इन्द्रने लङ्काद्वीपके अंदर मेरे हाथमें सौंपा था॥ ९½ ॥

'मेरी अन्तरात्मा भी यशस्विनी सीताको शुद्ध समझती है। इसीलिये मैं इन विदेहनन्दिनीको साथ लेकर अयोध्या आया था॥ १०½ ॥

SHREE RAM TOLD LAKSHMAN TO SEND SITA TO THAT ASHRAM THAT SITA WANTED TO GO.BECASUE OF SEPARATION SHREE RAM WAS SAD
VALMIKI RAMAYANA UTTARAKANDA CHAPTER 45 VERSE 22 TO 25

'यदि तुमलोग मेरा सम्मान करते हो और मेरी आज्ञामें रहना चाहते हो तो अब सीताको यहाँसे वनमें ले जाओ। मेरी इस आज्ञाका पालन करो॥ २२½ ॥

'सीताने पहले मुझसे कहा था कि मैं गङ्गातटपर ऋषियोंके आश्रम देखना चाहती हूँ; अत: उनकी यह इच्छा भी पूर्ण की जाय'॥ २३½ ॥

इस प्रकार कहते-कहते श्रीरघुनाथजीके दोनों नेत्र आँसुओंसे भर गये। फिर वे धर्मात्मा श्रीराम अपने भाइयोंके साथ महलमें चले गये। उस समय उनका हृदय शोकसे व्याकुल था और वे हाथीके समान लम्बी साँस खींच रहे थे॥ २४-२५ ॥

SHREE KRISHNA

HOW OLD WAS RUKMANI?

PEOPLE SHOW AN OUT OF CONTEXT TRANSLATION THAT WILL SAY SHE WAS 8 YEAR OLD.FALSE ON THAT REFERENCE IT SAYS SHE WAS 8 YEAR OLD WHEN HER PARENTS THOUGHT ABOUT MARRYING HER WITH SIHUPALA.SO WHEN DID RUKMANI GET MARRIED?WHEN SHE WAS 16 YEAR OLD.AFTER THAT SHE AND SHREE KRSIHNA DID A 12 YEAR PENANCE AND FOLLOW BRAMHACHARIYA TO GET THEIR FIRST SON PRADYUMANA.

REFERNCE

WHEN SHREE KRISHNA ABDUCTS RUKMANI SHE WAS 16 YEAR OLD
HARIVAMSA PURANA VISHNU KHANDA CHAPTER 59 VERSE 37,38 ALSO THE CHAPTER NAME IS ABDUCTION OF RUKMANI SO YOU KNOW ITS TALKING ABOUT THAT TIME

मरीचिमिव सोमस्य सौम्यां स्त्रीविग्रहां भुवि।
श्रीमिवाग्र्यां विना पद्मं भविष्यां श्रीसहायिनीम्।
कृष्णेन मनसा दृष्टां दुर्निरीक्ष्यां सुरैरपि॥ ३७

श्यामावदाता सा ह्यासीत् पृथुचार्वायतेक्षणा।
ताम्रौष्ठनयनापाङ्गी पीनोरुजघनस्तनी॥ ३८

मूर्तिमती भूदेवीके समान जान पड़ती थी॥ ३६॥ उसे
देखकर ऐसा प्रतीत होता था, मानो चन्द्रमाकी सौम्य
किरण सुन्दरी नारीका रूप धारण करके पृथ्वीपर उतरी
हो, बिना कमलकी श्रेष्ठ लक्ष्मी हो अथवा भविष्यमें
होनेवाली लक्ष्मीकी सहायिका हो। देवताओंके लिये भी
जिसका दर्शन होना अत्यन्त कठिन था, उस रुक्मिणीको
श्रीकृष्णने जी भरकर देखा॥ ३७॥ उसकी सोलह वर्षकी
अवस्था थी। अङ्गोंकी कान्ति गौरवर्णकी थी। उसके नेत्र
बहुत ही मनोहर एवं विशाल थे। ओठ तथा नयनोंके
प्रान्तभाग ताँबेके समान लाल थे। जाँघ, नितम्ब और

RUKMANI AND KRISHNA DID 12 YEAR PENANCE AND FOLLOW BRAMHACHARIYA TO GET THEIR FIRST SON PARADYUMANA
MAHABHARAT SAUPTIK PARVA CHAPTER 12 VERSE 30,31,32

ब्रह्मचर्यं महद् घोरं तीर्त्वा द्वादशवार्षिकम् ।
हिमवत्पार्श्वमास्थाय यो मया तपसार्जितः ।। ३० ।।
समानव्रतचारिण्यां रुक्मिण्यां योऽन्वजायत ।
सनत्कुमारस्तेजस्वी प्रद्युम्नो नाम मे सुतः ।। ३१ ।।
तेनाप्येतन्महद् दिव्यं चक्रमप्रतिमं रणे ।
न प्रार्थितमभून्मूढ यदिदं प्रार्थितं त्वया ।। ३२ ।।

"मूढ ब्राह्मण! मैंने बारह वर्षोंतक अत्यन्त घोर ब्रह्मचर्यव्रतका पालन करके हिमालयकी घाटीमें रहकर बड़ी भारी तपस्याके द्वारा जिसे प्राप्त किया था, मेरे समान व्रतका पालन करनेवाली रुक्मिणीदेवीके गर्भसे जिसका जन्म हुआ है, जिसके रूपमें

साक्षात् तेजस्वी सनत्कुमारने ही मेरे यहाँ अवतार लिया है, वह प्रद्युम्न मेरा प्रिय पुत्र है। परंतु रणभूमिमें जिसकी कहीं तुलना नहीं है, मेरे इस परम दिव्य चक्रको कभी उस प्रद्युम्नने भी नहीं माँगा था, जिसकी आज तुमने माँग की है ।।

ABDUCTION OF RUKMANI

PEOPLE USE THIS STORY TO SHOW THAT KRISHNA ABDUCTED AN GIRL WHICH IS TRUE BUT DON'T KNOW THE CONTEXT BEHIND IT.RUKMANI WROTE AN LETTER TO SHRI KRISHNA SAYING SHE WANTS TO MARRY HIM BUT HIS FAMILY MANILY HIS BROTHER RUKMI IS AGAINST THAT MARRIAGE HE WANTED TO MARRY HER TO SISHUPAL.AFTER THAT KRISHNA ABDUCT HER AND MARRY HER.

REFERENCE

RUKMANI'S LETTER IN WHICH SHE SAID SHE WANTED TO MARRY SHREE KRISHNA AND NOT SISHUPAL AND TOLD HIM TO TAKE HIM AWAY ONE DAY BEFORE THE MARRIAGE DAY
SRIMAD BHAGAVAT MAHAPURANA CANTO 10 CHAPTER 52 VERSE 37 TO 41

रुक्मिणीजीने कहा है—त्रिभुवनसुन्दर! आपके गुणोंको, जो सुननेवालोंके कानोंके रास्ते हृदयमें प्रवेश करके एक-एक अंगके ताप, जन्म-जन्मकी जलन बुझा देते हैं तथा अपने रूप-सौन्दर्यको जो नेत्रवाले जीवोंके नेत्रोंके लिये धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष—चारों पुरुषार्थोंके फल एवं स्वार्थ-परमार्थ, सब कुछ हैं, श्रवण करके प्यारे अच्युत! मेरा चित्त लज्जा, शर्म सब कुछ छोड़कर आपमें ही प्रवेश कर रहा है ।।३७।। प्रेमस्वरूप श्यामसुन्दर! चाहे जिस दृष्टिसे देखें; कुल, शील, स्वभाव, सौन्दर्य, विद्या, अवस्था, धन-धाम—सभीमें आप अद्वितीय हैं, अपने ही समान हैं। मनुष्यलोकमें जितने भी प्राणी हैं, सबका मन आपको देखकर शान्तिका अनुभव करता है, आनन्दित होता है। अब पुरुषभूषण! आप ही बतलाइये—ऐसी कौन-सी कुलवती महागुणवती और धैर्यवती कन्या होगी, जो विवाहके योग्य समय आनेपर आपको ही पतिके रूपमें वरण न करेगी? ।।३८।। इसीलिये प्रियतम! मैंने आपको पतिरूपसे वरण किया है। मैं आपको आत्मसमर्पण कर चुकी हूँ। आप अन्तर्यामी हैं। मेरे हृदयकी बात आपसे छिपी नहीं है। आप यहाँ पधारकर मुझे अपनी पत्नीके रूपमें स्वीकार कीजिये। कमलनयन! प्राणवल्लभ! मैं आप-सरीखे वीरको समर्पित हो चुकी हूँ, आपकी हूँ। अब जैसे सिंहका भाग सियार छू जाय, वैसे कहीं शिशुपाल निकटसे आकर मेरा स्पर्श न कर जाय ।।३९।। मैंने यदि जन्म-जन्ममें पूर्त (कुआँ, बावली आदि खुदवाना), इष्ट (यज्ञादि करना), दान, नियम, व्रत तथा देवता, ब्राह्मण और गुरु आदिकी पूजाके द्वारा भगवान् परमेश्वरकी ही आराधना की हो और वे मुझपर प्रसन्न हों तो भगवान् श्रीकृष्ण आकर मेरा पाणिग्रहण करें; शिशुपाल अथवा दूसरा कोई भी पुरुष मेरा स्पर्श न कर सके ।।४०।। प्रभो! आप अजित हैं। जिस दिन मेरा विवाह होनेवाला हो उसके एक दिन पहले आप हमारी राजधानीमें गुप्तरूपसे आ जाइये और फिर बड़े-बड़े सेनापतियोंके साथ शिशुपाल तथा जरासन्धकी सेनाओंको मथ डालिये, तहस-नहस कर दीजिये और बलपूर्वक राक्षस-विधिसे वीरताका मूल्य देकर मेरा पाणिग्रहण कीजिये ।।४१।। यदि आप यह सोचते हों कि 'तुम तो अन्त:पुरमें—भीतरके जनाने महलोंमें

SHREE KRISHNA ABDUCTS RUKMANI
SRIMAD BHAGAVAT MAHAPURANA CANTO 10 CHAPTER 53 VERSE 55

उसी समय उन्हें श्यामसुन्दर भगवान् श्रीकृष्णके दर्शन हुए ।।५४।। राजकुमारी रुक्मिणीजी रथपर चढ़ना ही चाहती थीं कि भगवान् श्रीकृष्णने समस्त शत्रुओंके देखते-देखते उनकी भीड़मेंसे रुक्मिणीजीको उठा लिया और उन सैकड़ों राजाओंके सिरपर पाँव रखकर उन्हें अपने उस रथपर बैठा लिया, जिसकी ध्वजापर गरुड़का चिह्न लगा हुआ था ।।५५।। इसके

SHREE KRISHNA MARRIED RUKMANI
SRIMAD BHAGAVAT MAHAPURANA CANTO 10 CHAPTER 54 VERSE 53

परीक्षित्! भगवान् श्रीकृष्णने इस प्रकार सब राजाओंको जीत लिया और विदर्भराजकुमारी रुक्मिणीजीको द्वारकामें लाकर उनका विधिपूर्वक पाणिग्रहण किया ।।५३।। हे राजन्! उस समय द्वारकापुरीमें घर-घर बड़ा ही उत्सव मनाया जाने लगा।

RUKMANI IS AVATAR OF SHREE LAKSHMI
SRIMAD BHAGAVAT MAHAPURANA CANTO 10 CHAPTER 54 VERSE 60

विस्मित हो गयीं ।।५९।। महाराज! भगवती लक्ष्मीजीको रुक्मिणीके रूपमें साक्षात् लक्ष्मीपति भगवान् श्रीकृष्णके साथ देखकर द्वारकावासी नर-नारियोंको परम आनन्द हुआ ।।६०।।

RADHA WAS KRISHNA'S MAMI?

PEOPLE SAY THAT KRSIHNA HAD AN AFFAIR WITH HIS MAMI WHICH IS FASLE
RADHA'S SHADOW MARRIED RAYAN AND REAL RADHA MARRIED SHREE KRISHNA

REFERENCE

RADHA CREATED A SHADOW AND LEFT IT HOME.THAT SHADOW RADHA MARRIED RAYAN
BRAMHAVAIVARTA PURANA PRAKRITI KHANDA CHAPTER 36

श्रीराधा प्रकट हो गयीं। बारह वर्ष बीतनेपर उन्हें नूतन यौवनमें प्रवेश करती देख माता-पिताने 'रायाण' वैश्यके साथ उसका सम्बन्ध निश्चित कर दिया। उस समय श्रीराधा घरमें अपनी छायाको स्थापित करके स्वयं अन्तर्धान हो गयीं। उस छायाके साथ ही उक्त रायाणका विवाह हुआ।

RAAYAN WAS KRISHNA'S MAMA ALSO A PART OF SHREE KRSIHNA
BRAMHAVAIVARTA PURANA PRAKRITI KHANDA CHAPTER 36

शैशवावस्थामें ही गोकुल पहुँचा दिये गये थे। वहाँ श्रीकृष्णकी माता जो यशोदा थीं, उनका सहोदर भाई 'रायाण' था। गोलोकमें तो वह श्रीकृष्णका अंशभूत गोप था, पर इस अवतारके समय भूतलपर वह श्रीकृष्णका मामा लगता था। जगत्स्रष्टा विधाताने

KRISHNA AND RADHA GOT MARRIED
BRAMHAVAIVARTA PURANA PRAKRITI KHANDA CHAPTER 36

पुण्यमय वृन्दावनमें श्रीकृष्णके साथ साक्षात् श्रीराधाका विधिपूर्वक विवाहकर्म सम्पन्न कराया था। गोपगण

REAL RADHA STAYED WITH SHREE KRISHNA AND SHADOW RADHA WITH RAYAN
BRAMHAVAIVARTA PURANA PRAKRITI KHANDA CHAPTER 36

कर पाते थे। साक्षात् राधा श्रीकृष्णके वक्षःस्थलमें वास करती थीं और छायाराधा रायाणके घरमें।

A WHOLE CHAPTER IS DEDICATED ON HOW THEY GOT MARRIED BY BRAMHA
BRAMHAVAIVARTA PURANA KRISHNAJANMA KHANDA CHAPTER 13

नन्दका शिशु श्रीकृष्णको लेकर वनमें गो-चारणके लिये जाना, श्रीराधाका आगमन, नन्दसे उनकी वार्ता, शिशु कृष्णको लेकर राधाका एकान्त वनमें जाना, वहाँ रत्नमण्डपमें नवतरुण श्रीकृष्णका प्रादुर्भाव, श्रीराधा-कृष्णकी परस्पर प्रेमवार्ता, ब्रह्माजीका आगमन, उनके द्वारा श्रीकृष्ण और राधाकी स्तुति, वर-प्राप्ति तथा उनका विवाह कराना, नवदम्पतिका प्रेम-मिलन तथा आकाशवाणीके आश्वासन देनेपर शिशुरूपधारी श्रीकृष्णको लेकर राधाका यशोदाजीके पास पहुँचाना

SHREE KRISHNA MARRIED 16100 WOMEN AND INCEST

PEOPLE SAYS THAT KRISHNA HAD 16100 WIFE AND HIS SISTER VARIOUS MYTHS WITHOUT KNOWING THE ACTUAL CONTEXT BEHIND IT.KRISHNA RESCUED ALL THE 16100 WOMEN FROM AN ASUR AND THE WOMEN WANTED TO MARRY KRISHNA.THEN KRISHNA CREATED 16100 AVATAR OF HIMSELF AND MARRY ALL HE 16100 WOMEN AT THE SAME TIME.WE WILL ALSO SEE WHEN NARAD VISIT DWARKA HE DESCRIBES HOW KRSIHNA IN HIS 16100 AVATAR LIVES WITH ALL WIS WIFE AT THE SAME TIME.AND ALL THE WIFE OF KRSIHNA IS AVATAR OF GODESS LAKSHMI AND KRISHNA IS AVATAR OF VISHNU AND THEY ARE ETERNALLY MARRIED SO SHREE KRSIHNA AS AN AVATAR OF VISHNU MARRYING ONLY HIS WIFE NOT 16100 DIFFERENT WOMEN.

REFERENCE

WHEN SHREE KRSIHNA SAVED 16100 WOMEN THEY ALL WANTED SHREE KRISHNA AS THEIR HUSBAND
SRIMAD BHAGAVAT MAHAPURANA CANTO 10 CHAPTER 59 VERSE 33,34

भौमासुरके समस्त सम्पत्तियोंसे सम्पन्न महलमें प्रवेश किया ।।३२।। वहाँ जाकर भगवान्ने
देखा कि भौमासुरने बलपूर्वक राजाओंसे सोलह हजार राजकुमारियाँ छीनकर अपने यहाँ रख
छोड़ी थीं ।।३३।। जब उन राजकुमारियोंने अन्तःपुरमें पधारे हुए नरश्रेष्ठ भगवान् श्रीकृष्णको
देखा, तब वे मोहित हो गयीं और उन्होंने उनकी अहैतुकी कृपा तथा अपना सौभाग्य
समझकर मन-ही-मन भगवान्को अपने परम प्रियतम पतिके रूपमें वरण कर लिया ।।३४।।

SHREE KRSIHNA TURN HIMSELF IN TO 16100 DIFFERENT AVATAR AND MARRY OF THEM EXACT SAME TIME
SRIMAD BHAGAVAT MAHAPURANA CANTO 10 CHAPTER 59 VERSE 42

तदनन्तर भगवान् श्रीकृष्णने एक ही मुहूर्तमें अलग-अलग भवनोंमें अलग-अलग रूप
धारण करके एक ही साथ सब राजकुमारियोंका शास्त्रोक्त विधिसे पाणिग्रहण किया।
सर्वशक्तिमान् अविनाशी भगवान्के लिये इसमें आश्चर्यकी कौन-सी बात है ।।४२।। परीक्षित्!

SHREE KRISHNA TURN HIMSELF IN TO 16100 AVATAR AND STAYING WITH EVERY ALL OF THEM IN DIFFERENT HOMES AT THE SAME TIME
SRMAD BHAGAVAT MAHAPURANA CANTO 10 CHAPTER 69 VERSE 2

है, तब उनके मनमें भगवान्की रहन-सहन देखनेकी बड़ी अभिलाषा हुई ।।१।। वे सोचने लगे
—अहो, यह कितने आश्चर्यकी बात है कि भगवान् श्रीकृष्णने एक ही शरीरसे एक ही समय
सोलह हजार महलोंमें अलग-अलग सोलह हजार राजकुमारियोंका पाणिग्रहण किया ।।२।।

NARAD VISIST DWARKA AND SEES KRISHNA WITH 16100 WIFE WITH VARIOUS FROMS DOING NORMAL VARIOUS HOUSE HOLD WORKS AND STAYING WITH ALL OF THEM AT THE EXACT SAME TIME
SRIMAD BHAGAVAT CANTO 10 CHAPTER 69 VERSE 19 TO 30

परीक्षित्! इसके बाद देवर्षि नारदजी योगेश्वरोंके भी ईश्वर भगवान् श्रीकृष्णकी योगमायाका रहस्य जाननेके लिये उनकी दूसरी पत्नीके महलमें गये ।।१९।। वहाँ उन्होंने देखा कि भगवान् श्रीकृष्ण अपनी प्राणप्रिया और उद्धवजीके साथ चौसर खेल रहे हैं। वहाँ भी भगवान्ने खड़े होकर उनका स्वागत किया, आसनपर बैठाया और विविध सामग्रियोंद्वारा बड़ी भक्तिसे उनकी अर्चा-पूजा की ।।२०।। इसके बाद भगवान्ने नारदजीसे अनजानकी तरह पूछा—'आप यहाँ कब पधारे! आप तो परिपूर्ण आत्माराम—आप्तकाम हैं और हमलोग हैं अपूर्ण। ऐसी अवस्थामें भला हम आपकी क्या सेवा कर सकते हैं ।।२१।। फिर भी ब्रह्मस्वरूप नारदजी! आप कुछ-न-कुछ आज्ञा अवश्य कीजिये और हमें सेवाका अवसर देकर हमारा जन्म सफल कीजिये।' नारदजी यह सब देख-सुनकर चकित और विस्मित हो रहे थे। वे वहाँसे उठकर चुपचाप दूसरे महलमें चले गये ।।२२।। उस महलमें भी देवर्षि नारदने देखा कि भगवान् श्रीकृष्ण अपने नन्हे-नन्हे बच्चोंको दुलार रहे हैं। वहाँसे फिर दूसरे महलमें गये तो क्या देखते हैं कि भगवान् श्रीकृष्ण स्नानकी तैयारी कर रहे हैं ।।२३।। (इसी प्रकार देवर्षि नारदने विभिन्न महलोंमें भगवान्को भिन्न-भिन्न कार्य करते देखा।) कहीं वे यज्ञ-कुण्डोंमें हवन कर रहे हैं तो कहीं पंचमहायज्ञोंसे देवता आदिकी आराधना कर रहे हैं। कहीं ब्राह्मणोंको भोजन करा रहे हैं, तो कहीं यज्ञका अवशेष स्वयं भोजन कर रहे हैं ।।२४।। कहीं सन्ध्या कर रहे हैं, तो कहीं मौन होकर गायत्रीका जप कर रहे हैं। कहीं हाथोंमें ढाल-तलवार लेकर उनको चलानेके पैतरे बदल रहे हैं ।।२५।। कहीं घोड़े, हाथी अथवा रथपर सवार होकर श्रीकृष्ण विचरण कर रहे हैं। कहीं पलंगपर सो रहे हैं, तो कहीं वंदीजन उनकी स्तुति कर रहे हैं ।।२६।। किसी महलमें उद्धव आदि मन्त्रियोंके साथ किसी गम्भीर विषयपर परामर्श कर रहे हैं, तो कहीं उत्तमोत्तम वारांगनाओंसे घिरकर जलक्रीडा कर रहे हैं ।।२७।। कहीं श्रेष्ठ ब्राह्मणोंको वस्त्राभूषणसे सुसज्जित गौओंका दान कर रहे हैं, तो कहीं मंगलमय इतिहास-पुराणोंका श्रवण कर रहे हैं ।।२८।। कहीं किसी पत्नीके महलमें अपनी प्राणप्रियाके साथ हास्य-विनोदकी बातें करके हँस रहे हैं। तो कहीं धर्मका सेवन कर रहे हैं। कहीं अर्थका सेवन कर रहे हैं—धन-संग्रह और धनवृद्धिके कार्यमें लगे हुए हैं, तो कहीं धर्मानुकूल गृहस्थोचित विषयोंका उपभोग कर रहे हैं ।।२९।। कहीं एकान्तमें बैठकर प्रकृतिसे अतीत पुराण-पुरुषका ध्यान कर रहे हैं, तो कहीं गुरुजनोंको इच्छित भोग-सामग्री समर्पित करके उनकी सेवा-शुश्रूषा कर रहे हैं ।।३०।।

NOW FOR THE MYTH KRISHNA MARRIED HIS SISTER.FIRST OF ALL THEY WERE NOT SISTER OF SHREE KRSIHNA BECAUSE SHREE KRSIHNA DIDN'T BORN FROM HER MOTHER HE MANIFESTED HIMSELF IN HIS DEVINE FORM HE IS BIRTHLESS.SO THEY BEING THEIR SISTER IS AN USELESS ARGUMENT.

SRIMAD BHAGAVAT MAHAPURANA CANTO 10 CHAPTER 3 VERSE 8 TO 10

लगे*। जलसे भरे हुए बादल समुद्रके पास जाकर धीरे-धीरे गर्जना करने लगे† ।।७।। जन्म-मृत्युके चक्रसे छुड़ानेवाले जनार्दनके अवतारका समय था निशीथ। चारों ओर अन्धकारका साम्राज्य था। उसी समय सबके हृदयमें विराजमान भगवान् विष्णु देवरूपिणी देवकीके गर्भसे प्रकट हुए, जैसे पूर्व दिशामें सोलहों कलाओंसे पूर्ण चन्द्रमाका उदय हो गया हो ।।८।।

वसुदेवजीने देखा, उनके सामने एक अद्भुत बालक है। उसके नेत्र कमलके समान कोमल और विशाल हैं। चार सुन्दर हाथोंमें शंख, गदा, चक्र और कमल लिये हुए हैं। वक्षःस्थलपर श्रीवत्सका चिह्न—अत्यन्त सुन्दर सुवर्णमयी रेखा है। गलेमें कौस्तुभमणि झिलमिला रही है। वर्षाकालीन मेघके समान परम सुन्दर श्यामल शरीरपर मनोहर पीताम्बर फहरा रहा है। बहुमूल्य वैदूर्यमणिके किरीट और कुण्डलकी कान्तिसे सुन्दर-सुन्दर घुँघराले बाल सूर्यकी किरणोंके समान चमक रहे हैं। कमरमें चमचमाती करधनीकी लड़ियाँ लटक रही हैं। बाँहोंमें बाजूबंद और कलाइयोंमें कंकण शोभायमान हो रहे हैं। इन सब आभूषणोंसे सुशोभित बालकके अंग-अंगसे अनोखी छटा छिटक रही है ।।९-१०।। जब वसुदेवजीने देखा

SHREE KRSIHNA TURN HIMSELF INTO A NORMAL BABY AND CREATED AN ANOTHER BABY BIRTHLESS LIKE HIM
SRIMAD BHAGVAT MAHAPURANA CANTO 10 CHAPTER 3 VERSE 46'47

श्रीशुकदेवजी कहते हैं—भगवान् इतना कहकर चुप हो गये। अब उन्होंने अपनी योगमायासे पिता-माताके देखते-देखते तुरंत एक साधारण शिशुका रूप धारण कर लिया ।।४६।। तब वसुदेवजीने भगवान्‌की प्रेरणासे अपने पुत्रको लेकर सूतिकागृहसे बाहर निकलनेकी इच्छा की। उसी समय नन्दपत्नी यशोदाके गर्भसे उस योगमायाका जन्म हुआ, जो भगवान्‌की शक्ति होनेके कारण उनके समान ही जन्म-रहित है ।।४७।। उसी योगमायाने

ALL OF THE FRIENDS GOPIS NANDA DEBKI ALL OF THEM ARE GODS THEMSELVES
SRIMAD BHAGAVATA MAHAPURANA CANTO 10 CHAPTER 1 VERSE 62 TO 64

नन्द आदि गोप, उनकी स्त्रियाँ, वसुदेव आदि वृष्णिवंशी यादव, देवकी आदि यदुवंशकी स्त्रियाँ और नन्द, वसुदेव दोनोंके सजातीय बन्धु-बान्धव और सगे-सम्बन्धी—सब-के-सब देवता हैं; जो इस समय तुम्हारी सेवा कर रहे हैं, वे भी देवता ही हैं।' उन्होंने यह भी बतलाया कि 'दैत्योंके कारण पृथ्वीका भार बढ़ गया है, इसलिये देवताओंकी ओरसे अब उनके वधकी तैयारी की जा रही है' ।।६२-६४।। जब देवर्षि नारद इतना कहकर चले गये, तब कंसको यह

ALL OF THE WIVES OF KRISHNA IS LAKSHMI AVATAR
SRIMAD BHAGAVAT CANTO 10 CHAPTER 59 VERSE 43

सर्वशक्तिमान् अविनाशी भगवान्‌के लिये इसमें आश्चर्यकी कौन-सी बात है ।।४२।। परीक्षित्! भगवान्‌की पत्नियोंके अलग-अलग महलोंमें ऐसी दिव्य सामग्रियाँ भरी हुई थीं, जिनके बराबर जगत्‌में कहीं भी और कोई भी सामग्री नहीं है; फिर अधिककी तो बात ही क्या है। उन महलोंमें रहकर मति-गतिके परेकी लीला करनेवाले अविनाशी भगवान् श्रीकृष्ण अपने आत्मानन्दमें मग्न रहते हुए लक्ष्मीजीकी अंशस्वरूपा उन पत्नियोंके साथ ठीक वैसे ही विहार करते थे, जैसे कोई साधारण मनुष्य घर-गृहस्थीमें रहकर गृहस्थ-धर्मके अनुसार आचरण करता हो ।।४३।। परीक्षित्! ब्रह्मा आदि बड़े-बड़े देवता भी भगवान्‌के वास्तविक स्वरूपको

SHREE KRSIHNA IS AVATAR OF VISHNU
VISHNU PURANA PART 5 CHAPTER 2 VERSE 1 TO 3

श्रीपराशर उवाच

यथोक्तं सा जगद्धात्री देववेन वै तथा।
षड्गर्भगर्भविन्यासं चक्रे चान्यस्य कर्षणम्॥ १

सप्तमे रोहिणीं गर्भे प्राप्ते गर्भं ततो हरिः।
लोकत्रयोपकाराय देवक्याः प्रविवेश ह॥ २

योगनिद्रा यशोदायास्तस्मिन्नेव तथा दिने।
सम्भूता जठरे तद्वद्यथोक्तं परमेष्ठिना॥ ३

श्रीपराशरजी बोले—हे मैत्रेय! देवदेव श्रीविष्णुभगवान्‌ने जैसा कहा था उसके अनुसार जगद्धात्री योगमायाने छः गर्भोंको देवकीके उदरमें स्थित किया और सातवेंको उसमेंसे निकाल लिया॥ १॥ इस प्रकार सातवें गर्भके रोहिणीके उदरमें पहुँच जानेपर श्रीहरिने तीनों लोकोंका उद्धार करनेकी इच्छासे देवकीके गर्भमें प्रवेश किया॥ २॥ भगवान् परमेश्वरके आज्ञानुसार योगमाया भी उसी दिन यशोदाके गर्भमें स्थित हुई॥ ३॥ हे द्विज! विष्णु-

NOW WE WILL SEE GODESS LAKSHMI AND VISHNU IS ETERNALLY MARRIED GODESS LAKSHMI APPEARS SRIMAD BHAGAVAT MAHAPURANA CANTO 8 CHAPTER 8 VERSE 8

चितवनसे देवताओंको सुख पहुँचानेवाली हुईं ।।७।। इसके बाद शोभाकी मूर्ति स्वयं भगवती लक्ष्मीदेवी प्रकट हुईं। वे भगवान्‌की नित्यशक्ति हैं। उनकी बिजलीके समान चमकीली छटासे दिशाएँ जगमगा उठीं ।।८।। उनके सौन्दर्य, औदार्य, यौवन, रूप-रंग और महिमासे सबका

LAKSHMI CHOSE VISHNU AS HIS HUSBAND AND HIS CHEST AS HIS PERMANENT PLACE SRIMAD BHAGAVAT MAHAPURANA CANTO 8 CHAPTER 8 VERSE 22 TO 24

समाधिमें ही तल्लीन रहते हैं ।।२१।। किसी-किसी ऋषिने आयु तो बहुत लंबी प्राप्त कर ली है, परन्तु उनका शील-मंगल भी मेरे योग्य नहीं है। किन्हींमें शील-मंगल भी है परन्तु उनकी आयुका कुछ ठिकाना नहीं। अवश्य ही किन्हींमें दोनों ही बातें हैं, परन्तु वे अमंगल-वेषमें रहते हैं। रहे एक भगवान् विष्णु—उनमें सभी मंगलमय गुण नित्य निवास करते हैं, परन्तु वे मुझे चाहते ही नहीं ।।२२।।

इस प्रकार सोच-विचारकर अन्तमें श्रीलक्ष्मीजीने अपने चिर अभीष्ट भगवान्‌को ही वरके रूपमें चुना; क्योंकि उनमें समस्त सद्‌गुण नित्य निवास करते हैं। प्राकृत गुण उनका स्पर्श नहीं कर सकते और अणिमा आदि समस्त गुण उनको चाहा करते हैं; परन्तु वे किसीकी भी अपेक्षा नहीं रखते। वास्तवमें लक्ष्मीजीके एकमात्र आश्रय भगवान् ही हैं। इसीसे उन्होंने उन्हींको वरण किया ।।२३।। लक्ष्मीजीने भगवान्‌के गलेमें वह नवीन कमलोंकी सुन्दर माला पहना दी, जिसके चारों ओर झुंड-के-झुंड मतवाले मधुकर गुंजार कर रहे थे। इसके बाद लज्जापूर्ण मुसकान और प्रेमपूर्ण चितवनसे अपने निवासस्थान उनके वक्षःस्थलको देखती हुई वे उनके पास ही खड़ी हो गयीं ।।२४।।

VISHNU CHOSE LAKSHMI TO BE HIS WIFE AND HIS CHEST PERMANENT PLACE FOR LAKSHMI SRIMAD BHAGVATA MAHAPURNA CANTO 8 CHAPTER 8 VERSE 25

जगत्पिता भगवान्‌ने जगज्जननी, समस्त सम्पत्तियोंकी अधिष्ठातृदेवता श्रीलक्ष्मीजीको अपने वक्षःस्थलपर ही सर्वदा निवास करनेका स्थान दिया। लक्ष्मीजीने वहाँ विराजमान होकर अपनी करुणाभरी चितवनसे तीनों लोक, लोकपति और अपनी प्यारी प्रजाकी अभिवृद्धि की ।।२५।। उस समय शंख, तुरही, मृदंग आदि बाजे बजने लगे। गन्धर्व अप्सराओंके साथ

SHREE KRISHNA STOLE CLOTHS OF GOPIS

THIS IS A WELL KNOWN STORY PEOPLE USE IT WITHOUT CONTEXT TO SHOW HOW PERVERTED KRISHNA WAS BUT THEY DONT TELL YOU THAT THE GOPIS WANTED HIS ASTHEIR HUSBAND THATS WHY THEY WERE DOING VRAT.BUT BATHING NAKED IN RIVER DISRESPECT THE GOD.SO KRISHNA TO FULFILL THEIR VRATS AND STOP THEM FROM DISRESPECTING THE GOD.EVEN AFTER THAT THE GOPIS DIDNT FIND HIM GUILTY.

REFERENCE

THE GOPIS WANTED KRISHNA AS THEIR HUSBAND
SRIMAD BHAGAVAT CANTO 10 CHAPTER 22 VERSE 4

स्वामिनी! आप नन्दनन्दन श्रीकृष्णको हमारा पति बना दीजिये। देवि! हम आपके चरणोंमें नमस्कार करती हैं।'—इस मन्त्रका जप करती हुई वे कुमारियाँ देवीकी आराधना करतीं ।।४।। इस प्रकार उन कुमारियोंने, जिनका मन श्रीकृष्णपर निछावर हो चुका था, इस

SHREE KRSIHNA WANTED TO FULFILL THEIR VRATS
SRIMAD BHAGAVAT CANTO 10 CHAPTER 22 VERSE 8

लगीं ।।७।। परीक्षित्! भगवान् श्रीकृष्ण सनकादि योगियों और शंकर आदि योगेश्वरोंके भी ईश्वर हैं। उनसे गोपियोंकी अभिलाषा छिपी न रही। वे उनका अभिप्राय जानकर अपने सखा ग्वालबालोंके साथ उन कुमारियोंकी साधना सफल करनेके लिये यमुना-तटपर गये ।।८।।

THE GIOPIS WERE DISRESPECTING THE GOD
SRIMAD BHAGAVAT CANTO 10 CHAPTER 22 VERSE 19

— ।।१८।। 'अरी गोपियो! तुमने जो व्रत लिया था, उसे अच्छी तरह निभाया है—इसमें सन्देह नहीं। परन्तु इस अवस्थामें वस्त्रहीन होकर तुमने जलमें स्नान किया है, इससे तो जलके अधिष्ठातृदेवता वरुणका तथा यमुनाजीका अपराध हुआ है। अतः अब इस दोषकी शान्तिके लिये तुम अपने हाथ जोड़कर सिरसे लगाओ और उन्हें झुककर प्रणाम करो, तदनन्तर अपने-अपने वस्त्र ले जाओ ।।१९।। भगवान् श्रीकृष्णकी बात सुनकर उन

EVEN AFTER THAT THE GOPIS DIDNT FIND HIM GUILTY
SRIMAD BHAGAVAT CANTO 10 CHAPTER 22 VERSE 22,23

आयी और उन्होंने उनके वस्त्र दे दिये ।।२१।। प्रिय परीक्षित्! श्रीकृष्णने कुमारियोंसे छलभरी बातें कीं, उनका लज्जा-संकोच छुड़ाया, हँसी की और उन्हें कठ-पुतलियोंके समान नचाया; यहाँतक कि उनके वस्त्र-तक हर लिये। फिर भी वे उनसे रुष्ट नहीं हुईं, उनकी इन चेष्टाओंको दोष नहीं माना, बल्कि अपने प्रियतमके संगसे वे और भी प्रसन्न हुईं ।।२२।। परीक्षित्! गोपियोंने अपने-अपने वस्त्र पहन लिये। परन्तु श्रीकृष्णने उनके चित्तको इस प्रकार अपने वशमें कर रखा था कि वे वहाँसे एक पग भी न चल सकीं। अपने प्रियतमके समागमके लिये सजकर वे उन्हींकी ओर लजीली चितवनसे निहारती रहीं ।।२३।।

SHREE KRISHNA AND KUBJA STORY

THIS IS A STORY WHICH PEOPLE USED TO SAY THAT KRISHNA RAPED AN OLD WOMEN THIS STORY IS FOUND IN BRAMHAVAIVARTA PURANA BUT NO WHERE IN THE WHOLE STORY IT TALKS ABOUT INTERCOURSE OR RAPE.ALSO DURING RAM YUG SHE DID TAPASSA TO MEET HIM

BRAMHAVAIVARTA PURANA KRISHNAJANMA KHANDA CHAPTER 53

REFERENCE

इस प्रकार मथुरापुरीकी शोभा देख आगे बढ़ते हुए कमलनयन श्रीकृष्णने मार्गमें कुब्जाको देखा, जो अत्यन्त जराजीर्ण एवं वृद्धा-सी थी। डंडेके सहारे चलती थी। अत्यन्त झुकी हुई थी और झुर्रियाँ लटक रही थीं। उसकी आकृति रूखी और विकृत थी। वह कस्तूरी और केसर मिला हुआ चन्दनका अनुलेपन लिये आ रही थी, जिसके स्पर्शमात्रसे शरीर सुगन्धित, सुस्निग्ध तथा अत्यन्त मनोहर हो जाता था। उस वृद्धाने शान्त,

ऐश्वर्ययुक्त, श्रीसम्पन्न, श्रीनिवास, श्रीबीज एवं श्रीनिकेतन श्यामसुन्दर श्रीवल्लभको मन्द मुस्कानके साथ देखा। देखते ही उसके दोनों हाथ जुड़ गये। वह भक्तिसे विनीत हो गयी और सहसा चरणोंमें सिर रखकर उसने प्रणाम किया। साथ ही उनके श्याम मनोहर अङ्गमें चन्दन लगाया। श्रीकृष्णके जो सखा थे, उनके अङ्गोंमें भी चन्दनका अनुलेपन किया। फिर चन्दनका सुवर्णमय पात्र हाथमें लिये श्रेष्ठ दासीने बारंबार परिक्रमा करके श्रीकृष्णको प्रणाम किया। श्रीकृष्णकी दृष्टि पड़ते ही वह सहसा अनुपम शोभासे सम्पन्न तथा रूप और यौवनसे लक्ष्मीके समान रमणीय हो गयी।

आगमें तपाकर शुद्ध की हुई स्वर्णप्रतिमाके समान दीप्तिमती हो उठी। सुन्दर वस्त्र और रत्नोंके आभूषण उसके अङ्गोंकी शोभा बढ़ाने लगे। वह बारह वर्षकी अवस्थावाली कुमारी कन्याके समान धन्या और मनोहारिणी प्रतीत होने लगी। बहुमूल्य रत्नोंद्वारा निर्मित श्रेष्ठतम हारसे उसका वक्ष:स्थल उद्भासित हो उठा। वह गजराजकी भाँति मन्द गतिसे चलने लगी। रत्नोंके मञ्जीर उसके चरणोंकी शोभा बढ़ाने लगे। सिरपर केशोंकी बँधी हुई वेणी मालतीकी मालासे आवेष्टित थी, जो सुन्दर और

गोलाकार दिखायी देती थी। उसने ललाटमें सिन्दूरकी बेंदी लगा रखी थी, जो अनारके फूलकी भाँति लाल थी। उस बेंदीके ऊपर कस्तूरी और चन्दनके भी बिन्दु थे। उस सुन्दरीने अपने हाथमें रत्नमय दर्पण ले रखा था। श्रीनिवास हरि उसे आश्वासन देकर आगे बढ़ गये। वह कृतार्थ हो प्रसन्नतापूर्वक अपने घर गयी, मानो लक्ष्मी अपने धामको जा रही हो। उसने अपने घरको देखा। वह लक्ष्मीके निवास-मन्दिरकी भाँति मनोहर हो गया था। उसमें रत्नमयी शय्या बिछी थी तथा उस भवनका निर्माण श्रेष्ठ रत्नोंके सारतत्त्वसे हुआ था। रत्नोंकी दीपमालाएँ अपनी प्रभासे उस गृहको उद्भासित कर रही थीं। उस भवनमें सब ओर रत्नमय दर्पण लगे थे, जो उसकी भव्यताको बढ़ा रहे थे। सिन्दूर, वस्त्र, ताम्बूल, श्वेत चँवर और माला लिये दास-दासियोंके समुदाय उस दिव्य भवनको घेरकर

खड़े थे। मुने! सुन्दरी कुब्जा मन, वाणी और शरीरसे श्रीहरिके चरणोंके ही चिन्तन और समाराधनमें लगी थी। वह निरन्तर यही सोचती रहती थी कि कब श्रीहरिका शुभागमन होगा और कब मैं उनके मनोहर मुखचन्द्रके दर्शन पाऊँगी। उसे सारा जगत् सदा श्रीकृष्णमय दिखायी देता था। करोड़ों कन्दर्पोंकी लावण्य-लीलासे सुशोभित श्यामसुन्दर पलभरके लिये भी उसे भूलते नहीं थे।

करके सब लोग पलंगपर सो गये। तदनन्तर श्रीकृष्ण कुब्जाके घर पधारे। उसने स्वागत किया। भगवान्‌ने उसको बताया—'प्रिये! श्रीरामावतारके समय तुमने मेरे लिये तप किया था; अतः अब मुझसे मिलकर जरा-मृत्युरहित और अत्यन्त दुर्लभ मेरे परमधाम गोलोकको जाओ।' इसी समय गोलोकसे एक रत्ननिर्मित रथ वहाँ आया और कुब्जा दिव्य देह धारण करके उसीके द्वारा गोलोकको चली गयी। मुने! वह वहीं चन्द्रमुखी गोपी हो गयी और कितनी ही गोपियाँ उसकी परिचारिका हुईं।

MAHADEV

SHIV MARRIED PARVATI WHEN SHE WAS 8

THIS IS A COMPLETELY A MYTH NO WHERE IT SAYS SHIV MARRIED PARVATI WHEN SHE WAS 8.WHAT IT ACTUALLY SAYS SHE DID 3000 YEAR OF TAPASSA FOR SHIV TO MARRY HER

REFERENCE

SHE ASKED HER PARNETS TO DO TAPASSA DID YEARS OF TAPASSA IN SUMMER IN WINTER FOR 3000 YEARS
SHIV PURANA RUDRASAMHITA PARVATI KHANDA CHAPTER 22

ब्रह्माजी बोले—हे देवर्षे! आपके चले जानेपर प्रसन्नचित्त पार्वतीने शिवजीको तपस्यासे ही साध्य माना और तपस्या करनेका मन बना लिया। तदनन्तर पार्वतीने अपनी जया एवं विजया नामक सखियोंके द्वारा अपनी माता मेना तथा पिता हिमालयसे तप करनेकी आज्ञा माँगी॥ १-२॥

तदनन्तर शिवा माता-पिताको प्रसन्नतापूर्वक प्रणामकर अपनी दोनों सखियोंको साथ लेकर शिवजीका स्मरण करके तपस्या करनेके लिये वनकी ओर चलीं॥ २८॥

हे मुने! वहाँ पार्वतीने अपनी तपस्याकी परीक्षाके लिये अनेक प्रकारके पवित्र, सुन्दर तथा फलवान् वृक्ष लगाये। उन सुन्दरीने भूमिशुद्धि और वेदीका निर्माण करके मनके साथ समस्त इन्द्रियोंको रोककर उसी स्थानपर मुनियोंके लिये भी कठिन तपस्या आरम्भ कर दी॥ ३७—३९॥

वे ग्रीष्मकालमें दिन-रात अग्नि प्रज्वलितकर उसके बीचमें बैठकर पंचाग्नि तापती हुई पंचाक्षर महामन्त्रका जप करती थीं॥ ४०॥

वे वर्षाके समय पत्थरकी चट्टानके स्थण्डिलपर

सुस्थिर आसन लगाकर बैठी हुई खुले आकाशके नीचे जलकी धारा सहन करतीं और भक्तिमें तत्पर होकर निराहार रहकर वे शीतकालकी रात्रियोंमें निरन्तर शीतल जलमें निवास करतीं॥ ४१-४२॥

इस प्रकार तप करती हुई तथा महेश्वरका चिन्तन करती हुई उन कालीने तीन हजार वर्ष इस तपोवनमें बिता दिये। जहाँपर शंकरजीने साठ हजार वर्षतक तपस्या की थी, उस स्थानपर कुछ क्षण रुककर वे अपने मनमें विचार करने लगीं॥ ५२-५३॥

SHIV AND MOHINI

THIS IS A POPULAR MYTH THAT SHIV FORCEFULLY HAD INTERCOURSE WITH MOHINI.WHICH IS COMPLETELY FALSE THE ACTUAL SCRIPTURE SAYS HUGGED HER AND SHIV WANTED TO SEE THAT MOHINI AVATAR OF VISHNU AND ASKED VISHNU TO SHOW THAT AVATAR.AFTER THAT SHIV GET OUT MOHINI'S MAYA ON HIS OWN AND VISHNU PRASIE HIM FOR THAT.

REFERENCE

SHIV ASKED VISHNU TO SEE THE MOHINI AVATAR
SRIMAD BHAGAVAT CANTO 8 CHAPTER 12 VERSE 12 TO 14

सभीको जानते हैं ।।११।। प्रभो! आप जब गुणोंको स्वीकार करके लीला करनेके लिये बहुत-से अवतार ग्रहण करते हैं, तब मैं उनका दर्शन करता ही हूँ। अब मैं आपके उस अवतारका भी दर्शन करना चाहता हूँ, जो आपने स्त्रीरूपमें ग्रहण किया था ।।१२।। जिससे दैत्योंको मोहित करके आपने देवताओंको अमृत पिलाया, स्वामिन्! उसीको देखनेके लिये हम सब आये हैं। हमारे मनमें उसके दर्शनका बड़ा कौतूहल है ।।१३।।

श्रीशुकदेवजी कहते हैं—जब भगवान् शंकरने विष्णुभगवान्से यह प्रार्थना की, तब वे गम्भीरभावसे हँसकर शंकरजीसे बोले ।।१४।।

IN THE SCRIPTURE IT CLEARLY MENTION SHIV HUGGED MOHINI NO WHERE IT SAY INTERCOURSE
SRIMAD BHAGAVAT CANTO 8 CHAPTER 12 VERSE 29

जैसे हाथी हथिनीका आलिंगन करता है, वैसे ही भगवान् शंकरने उसका आलिंगन किया। वह इधर-उधर खिसककर छुड़ानेकी चेष्टा करने लगी, इसी छीना-झपटीमें उसके सिरके बाल बिखर गये ।।२९।। वास्तवमें वह सुन्दरी भगवान्की रची हुई माया ही थी, इससे

SHIV GOT OUT OF THIS MAYA ON HIS OWN AND VISHNU PRAISE HIM FOR THAT
SRIMAD BHAGAVAT CANTO 8 CHAPTER 12 VERSE 38 TO 40

श्रीभगवान्ने कहा—देवशिरोमणे! मेरी स्त्रीरूपिणी मायासे विमोहित होकर भी आप स्वयं ही अपनी निष्ठामें स्थित हो गये। यह बड़े ही आनन्दकी बात है ।।३८।।

मेरी माया अपार है। वह ऐसे-ऐसे हाव-भाव रचती है कि अजितेन्द्रिय पुरुष तो किसी प्रकार उससे छुटकारा पा ही नहीं सकते। भला, आपके अतिरिक्त ऐसा कौन पुरुष है, जो एक बार मेरी मायाके फंदेमें फँसकर फिर स्वयं ही उससे निकल सके ।।३९।। यद्यपि मेरी यह गुणमयी माया बड़ों-बड़ोंको मोहित कर देती है, फिर भी अब यह आपको कभी मोहित नहीं करेगी। क्योंकि सृष्टि आदिके लिये समयपर उसे क्षोभित करनेवाला काल मैं ही हूँ, इसलिये मेरी इच्छाके विपरीत वह रजोगुण आदिकी सृष्टि नहीं कर सकती ।।४०।।

WHAT IS SHIV LINGA?

PEOPLE HAVE MISCONCEPTION THAT A LINGA A PENIS WHICH COMPLETELY FALSE EVEN MOST HINDUS DOES'T KNOW THAT.SHIV LINGA IS MANIFESTED FROM OF UNMANIFESTED SHIV.I WILL GIVE YOU TWO REFERENCE OF THIS CLAIM

REFERENCE

SRI LINGA PURANA PURVABHAG CHAPTER 3 VERSE 1 TO 3

सूतजी बोले—वह निर्गुण ब्रह्म शिव (अलिङ्ग) ही लिङ्ग (प्रकृति)-का मूल कारण है तथा स्वयं लिङ्गरूप (प्रकृतिरूप) भी है। लिङ्ग (प्रकृति)-को भी शिवोद्भासित जाना गया है। शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्ध आदिसे रहित, अगुण, ध्रुव, अक्षय, अलिङ्ग (निर्गुण) तत्त्वको ही शिव कहा गया है तथा शब्द-स्पर्श-रूप-रस-गन्धादिसे संयुक्त प्रधान प्रकृतिको ही उत्तम लिङ्ग कहा गया है॥ १—३॥

SHIV PURANA BIDESHWARSAMHITA CHAPTER 5 VERSE 10,11

इस विषयमें भगवान् शिवने जो कुछ कहा है और उसे मैंने गुरुजीके मुखसे जिस प्रकार सुना है, उसी तरह क्रमशः वर्णन करूँगा। एकमात्र भगवान् शिव ही ब्रह्मरूप होनेके कारण निष्कल (निराकार) कहे गये हैं॥ १०॥

रूपवान् होनेके कारण उन्हें 'सकल' भी कहा गया है। इसलिये वे सकल और निष्कल दोनों हैं। शिवके निष्कल—निराकार होनेके कारण ही उनकी पूजाका आधारभूत लिंग भी निराकार ही प्राप्त हुआ है अर्थात् शिवलिंग शिवके निराकार स्वरूपका प्रतीक है॥ ११॥

BRAMHA

BRAMHA AND SARASWATI/SATARUPA

THIS IS THE MOST POPULAR MYTH IN HINDUISM SO MANY PAEOPLE USE THIS STORY TO MOCK HINDUS.THAT BRAMHA MARRIED HIS DAUGHTER.WHO EVER SAYS THAT FIRST ASK HIM THEN WHO IS THE MOTHER?BECAUSE IF SHE IS BRAMHAS DAUGHTER THEN THERE MUST BE A MOTHER THERE IS NONE.SHE WAS CREATED NOT BORN BUT CREATED BY BRAMHA.THEY ARE TRYING TO PUT HUMAN LOGIC ON GODS AND BECAUSE OF KAMDEV VAN HE HAD LUST FOR HER AFTER THAT HE GAVE SHRAP TO KAMDEV THAT HE WILL BE KILLED BY SHIV THIS STORY IS ALSO FOUND IN SHIV PURANA.ALSO WE WILL SEE WHY BRMHA IS NOT GUILTY

REFERENCE

BRAMHA CREATE SATARUPA FROM HIS BODY
MATSYA PURANA CHAPTER 3 VERSE 30 TO 32

जब ब्रह्माने जगत्‌की सृष्टि करनेकी इच्छासे हृदयमें सावित्रीका ध्यान करके तपश्चरण प्रारम्भ किया। उस समय जप करते हुए उनका निष्पाप शरीर दो भागोंमें विभक्त हो गया। उनमें आधा भाग स्त्रीरूप और आधा पुरुषरूप हो गया। परंतप! वह स्त्री सरस्वती, 'शतरूपा' नामसे विख्यात हुई। वही सावित्री, गायत्री और ब्रह्माणी भी कही जाती

HE LUST FOR HER BECAUSE OF KAMDEV
MATSYA PURANA CHAPTER 3 VERSE 38

हुए होंठोंवाला दूसरा (तीसरा) मुख पीछेकी ओर उद्भूत हुआ तथा उनकी बायीं ओर कामदेवके बाणोंसे व्यथित-से दीखनेवाले एक अन्य (चौथे) मुखका आविर्भाव हुआ। सावित्रीकी ओर बार-बार अवलोकन करनेके

NOW WE WILL SEE WHY BRAMHA IS NOT GUILTY IT IS EPLAINED IN THE NEXT CHAPTER.LITERALLY THE NAME OF THE NEXT CHAPTER IN WHY BRAMHA IS NOT GUILTY
MATSYA PURANA CHAPTER 4

पुत्रीकी ओर बार-बार अवलोकन करनेसे ब्रह्मा दोषी क्यों नहीं हुए—एतद्विषयक मनुका प्रश्न, मत्स्यभगवान्‌का उत्तर तथा इसी प्रसङ्गमें आदिसृष्टिका वर्णन

IN THIS CHAPTER TWO REASON IS GIVEN REASON 1 SHE WAS AN DEVINE CREATURE AN GODESS SHE HAD NO SENSE ORGAN CAN NOT BE DESCRIBED BY HUMANS AND HUMANS CAN NOT UNDERSTAND IT.IF THE PERSON DOESN'T AGREE WITH IT EITHER HE IS NOT AN HUMAN OR HE AGREE WITH A STORY FROM THE SAME BOOK NOT WITH THIS ONE THEN THE PERSON IS AN HYPOCRITE

MATSYA PURANA CHAPTER 4 VERSE 2 TO 4

मत्स्यभगवान् कहने लगे—राजन्! रजोगुणसे उत्पन्न हुई यह शतरूपारूपी* आदिसृष्टि दिव्य है। जिस प्रकार इस (मूल प्रकृति)की इन्द्रियाँ इन्द्रियोंके विषयोंसे अतीत हैं, उसी प्रकार इस (शतरूपा, सहस्त्ररूपा नारी)-का शरीर भी इन्द्रियातीत है। यह दिव्य तेजसे सम्पन्न एवं दिव्य ज्ञानसे समुद्भूत है, अत: मांस-पिण्डरूप नेत्रधारी मानवोंद्वारा इसका भलीभाँति वर्णन नहीं किया जा सकता। जैसे सर्पोंके मार्गको सर्प तथा सम्पूर्ण पक्षियोंके मार्गको आकाशचारी पक्षी ही जान सकते हैं, वैसे ही (शतरूपा आदि) दिव्य जीवोंके (अचिन्त्य) मार्गको दिव्य जीव ही समझ सकते हैं, मानव कदापि नहीं जान सकते। राजेन्द्र! चूँकि देवताओंके

SECOND REASON IS GIVEN THAT SHE WAS CREATED FROM A PART OF BRAMHA NOT HIS BIOLOGICAL DAUGHTER

MATSYA PURANA CHAPTER 4 VERSE 7,8

लिये श्रेयस्कर नहीं है।* दूसरा कारण यह है कि जिस प्रकार ब्रह्मा सारे वेदोंके अधिष्ठाता हैं, उसी प्रकार (शतरूपारूपी) गायत्री ब्रह्माके अङ्गसे उत्पन्न हुई बतलायी जाती हैं। इसलिये यह मिथुनरूप (जोड़ा) अमूर्त (अव्यक्त) या मूर्तिमान् (व्यक्त) दोनों ही रूपोंमें कहा जाता है। यहाँतक कि जहाँ-

LASTLY BRAMHA GAVE SHRAP TO KAMDEV TO BE KILLED BY SHIV

MATSYA PURANA CHAPTER 4 VERSE 11,12

लगा, तथापि उस समय अपने उस कुकर्मसे प्रजापति ब्रह्मा लज्जासे अभिभूत हो गये और कामदेवको शाप देते हुए यों बोले—'चूँकि तुमने अपने बाणोंद्वारा मेरे भी मनको भलीभाँति क्षुब्ध कर दिया है, इसलिये भगवान् रुद्र शीघ्र ही तुम्हारे शरीरको भस्म कर डालेंगे।' तदनन्तर कामदेवने बड़ी

VISHNU

VISHNU AND VRINDA/TULSI

THIS IS ALSO A VERY WELL KNOWN MYTH THAT VISHNU SLEPT WITH SOMEONE ELSES WIFE TO DEFEAT A ASUR.BUT THIS IS A MYTH THIS STORY IS FOUND MANY PURANS NOT ONE OF THEM MENTIONS INTERCOURSE OR RAPE.AND VRINDA GOT A SHRAP TO GET VISHNU AS HER HUSBAND AND HIS HUSBAND WAS PART OF KRISHNA AS WELL.SO VISHNU WAS HIS HUSBAND TO BEGIN WITH SO CANT BE RAPE

REFERENCE

VRINDA'S SHRAP TO GET BORN AS A HUMAN BUT WILL GET VISHNU AS HER HUSBAND
DEVI BHAGAVAT PURANA CANTO 9 CHAPTER 17 VERSE 23 TO 27

एक समय जब मैं भगवान् श्रीकृष्णके साथ विहारमें अचेत तथा अतृप्त अवस्थामें थी, तभी रासकी अधिष्ठात्री देवी भगवती राधाने रासमण्डलमें आकर मुझे देख लिया। उन्होंने श्रीकृष्णकी बहुत भर्त्सना की और कुपित होकर मुझे शाप दे दिया था—'तुम मनुष्ययोनि प्राप्त करो'—यह शाप उन्होंने मुझे दे दिया॥ २३-२४½॥

तब उन गोविन्दने मुझसे कहा—'भारतवर्षमें जन्म लेकर घोर तपस्या करके तुम ब्रह्माजीके वरदानसे मेरे अंशस्वरूप चतुर्भुज विष्णुको पतिरूपमें प्राप्त करोगी'। इस प्रकार कहकर वे देवेश्वर श्रीकृष्ण अन्तर्धान हो गये। हे गुरो! देवी राधाके भयसे अपना वह शरीर त्यागकर मैंने अब भूमण्डलपर जन्म लिया है और सुन्दर विग्रहवाले तथा शान्तस्वभाव भगवान् नारायण जो उस समय मेरे पति थे, उन्हींको अब भी पतिरूपमें प्राप्त करनेके लिये वर माँग रही हूँ, आप मुझे यह वर दीजिये॥ २५—२७½॥

HIS HUSBAND IS PART OF SHREE KRISHNA(VISHNU)
DEVI BHAGAVAT PURANA CANTO 9 CHAPTER 17 VERSE 28,29

ब्रह्मदेव बोले—भगवान् श्रीकृष्णके अंगसे प्रादुर्भूत, उन्हींके अंशस्वरूप तथा परम तेजस्वी सुदामा नामक गोपने भी इस समय भारतवर्षमें जन्म लिया है। वह राधाके शापसे दनुवंशमें उत्पन्न हुआ है और शंखचूड़ नामसे विख्यात है, उसके समान तीनों लोकोंमें कोई भी नहीं है॥ २८-२९½ ॥

VISHNU AS DIDGUISED AS HER HUSBAND WAS DOING PLAYFUL, AFFECTIONATE ASSOCIATION(VIHAR)VIHAR DOESNT MEAN INTERCOURSE LIKE KRSIHNA DOING VIHAR WITH GOPIS MEANS KRISHNA ENGAGES IN DIVINE, JOYFUL PASTIMES WITH THE GOPIS.IF IT WOULD HAVE MEANS INTERCOURSE IT WOULD HAVE SAID SAMBHOG OR MAITHUN ALSO TULSI FIND OUT THAT HE WAS NOT HIS ACTUAL HUSBAND AND GAVE HIM SHRAP

DEVI BHAGAVAT PURANA CANTO 9 CHAPTER 24 VERSE 16 TO 18

हे नारद! यह कहकर जगन्नाथ रमापति श्रीहरि शय्यापर सो गये और जब उस रमणीके साथ विहार करने लगे, तब उस साध्वी तुलसीने अपने मनमें विचार करके सब कुछ जान लिया और 'तुम कौन हो?'—ऐसा वह उनसे पूछने लगी॥ १६-१७½ ॥

तुलसी बोली—हे मायेश! तुम कौन हो, यह मुझे बताओ। तुमने छलपूर्वक मेरा सतीत्व नष्ट किया, अतः मैं तुम्हें शाप देती हूँ॥ १८½ ॥

PRETTY SUCH THE SAME STORY FOUND IN BRAMHAVAIVARTA PURANA VISHNU AS DISGUISED AS SANKHACHUR DID LIGHTHEARTED, JOYFUL INTERACTION(HAS-VILAS)TULSI ASLO FOUND OUT THAT HE WAS NOT HIS HUSBAND GAVE HIM SHRAP.ALSO THAT HIS HUSBAND IS PART OF HIM AND SHE DID TAPASSA TO GET VISHNU AS HIS HUSBAND

BRAMHAVAIVARTA PURANA PRAKRITI KHANDA CHAPTER 19

तुलसीने पतिको युद्धसे आया देख उत्सव मनाया और महान् हर्षभरे हृदयसे स्वागत किया। फिर दोनोंमें युद्धसम्बन्धी चर्चा हुई; तदनन्तर शङ्खचूड़के वेषमें जगत्प्रभु भगवान् श्रीहरि सो गये। नारद! उस समय तुलसीके साथ उन्होंने सुचारुरूपसे

हास-विलास किया तथापि तुलसीको इस बार पहलेकी अपेक्षा आकर्षण आदिमें व्यतिक्रमका अनुभव हुआ; अत: उसने सारी वास्तविकताका अनुमान लगा लिया और पूछा।

तुलसीने कहा—मायेश! बताओ तो तुम कौन हो? तुमने कपटपूर्वक मेरा सतीत्व नष्ट कर दिया; इसलिये अब मैं तुम्हें शाप दे रही हूँ।

भगवान् श्रीहरि बोले—भद्रे! तुम मेरे लिये भारतवर्षमें रहकर बहुत दिनोंतक तपस्या कर चुकी हो। उस समय तुम्हारे लिये शङ्खचूड़ भी तपस्या कर रहा था। (वह मेरा ही अंश था।) अपनी तपस्याके फलसे तुम्हें स्त्रीरूपमें प्राप्त करके वह गोलोकमें चला गया। अब मैं तुम्हारी तपस्याका फल देना उचित समझता हूँ।

AGAIN THE SAME STORY FOUND IN SHIV PURAN IT SAYS RAMAN NO INTERCOURSE AGAIN AND TULSI FOUND OUT THAT HE WAS NOT HIS HUSBAND AND GAVE HIM SHRAP
SHIV PURAN RUDRASAMHITA YUDDHA KHANDA CHAPTER 41 VERSE 28 TO 30

सनत्कुमार बोले—ऐसा कहकर जगत्पति रमानाथने शयन किया और रमासे रमापतिके समान प्रसन्नतासे उस स्त्रीके साथ रमण किया। उस साध्वीने रतिकालमें सुख, भाव और आकर्षणमें भेद देखकर सारी बातें जान लीं और उसने कहा—तुम कौन हो?॥ २८-२९॥

तुलसी बोली—तुम मुझे शीघ्र बताओ कि तुम हो कौन? तुमने मेरे साथ कपट किया और मेरे सतीत्वको नष्ट किया है, अत: मैं तुमको शाप देती हूँ॥ ३०॥